हिन्दू मानसिकता

दत्तोपन्त ठेंगड़ी

हिन्दू मानसिकता

दत्तोपन्त ठेंगड़ी

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुञ्ज, झण्डेवाला
नई दिल्ली

प्रकाशक :
सुरुचि प्रकाशन,
केशवकुञ्ज, झण्डेवाला, नई दिल्ली-110055
दूरभाष : 011-23514672

E-mail : suruchiprakashan@vsnl.net
suruchiprakashan@gmail.com

Website : www.suruchiprakashan.com

© सुरुचि प्रकाशन

प्रथम संस्करण : वि.संवत् 2065 (2009 ई.)

मूल्य : 20.00 रुपये

आवरण पृष्ठ एवं अक्षर संयोजक :
विनायक प्रिन्ट-एन-ग्राफिक्स
शकरपुर, दिल्ली-110092
दूरभाष : 011-65410755

मुद्रक : प्रिन्ट ऑफसैट, E-39, एस.एम.ए. इंडस्ट्रियल एरिया,
दिल्ली-110033 दूरभाष : 27691032

ISBN : 81-89622-53-6

अपनी ओर से

दिसम्बर 1990 की 23 से 25 तारीख तक रा. स्व. संघ की ओर से लुधियाना में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसमें पंजाब प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। संघ के सह सर-कार्यवाह माननीय 'रज्जू भैया' जी तो अपनी अन्य व्यस्तताओं के कारण एक दिन ही सम्मेलन का मार्गदर्शन कर सके परन्तु अखिल भारतीय मजदूर संघ के प्रधान माननीय दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी पूरे समय सम्मेलन में उपस्थित रहे।

अपने भाषण में ठेंगड़ी जी ने संघ की कार्य पद्धति पर किये जाने वाले आक्षेपों का समाधान किया, संघ की शाखा पद्धति तथा स्वयंसेवक निर्माण करने की कला के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

आतंकवाद क्या है? क्यों है? इसका समाधान कैसे किया जा सकता है? इसके लिए सरकार और जनता की भूमिका क्या होनी चाहिए? इत्यादि प्रश्नों के सटीक उत्तर दिये।

आवेश और होश में क्या अन्तर है? लहर और स्थाई शक्ति का परिणाम क्या होता है? प्रकृति का विरोध करना, मूलतः विनाश को निमन्त्रण देना है। इस व्याख्यानात्मक पुस्तक में इन सभी विषयों की विद्वत्तापूर्ण व्याख्या की गई है।

यद्यपि दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी का मार्गदर्शन जब पंजाब में आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर था तब किया गया था किन्तु यह मार्गदर्शन सार्वकालिक और सर्वोपयोगी है। स्वयंसेवक बन्धुओं के साथ-साथ हिन्दू मानस के सभी बन्धुओं के लिए भी प्रेरणादायी है। इसलिए सुरुचि प्रकाशन ने इसे पुनः छापने का निर्णय लिया। इसके लिए हम आकाशवाणी प्रकाशन, जालंधर तथा पंजाब प्रान्त के अधिकारियों के भी विनम्र आभारी हैं।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	राष्ट्रीय एकात्मता एवं हमारा प्रयास	1
2.	संघ केवल स्वयंसेवक निर्माण करेगा	5
3.	हिन्दू मानसिकता	9
4.	सरकार की इच्छाशक्ति से आतंकवाद का दमन	21
5.	समझदारी के विभिन्न स्तर	28
6.	समय के अनुसार झुकना भी नीति है	34
7.	विजय के विश्वास से प्रतिकूलता भी बर्दाशत करते हैं	37
8.	प्रकृति के नियम का विरोध ही नाश का कारण है	41

राष्ट्रीय एकात्मता एवं हमारा प्रयास

संघ कार्य : वैचारिक क्रान्ति -

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बहादुर आदमी को कायर बनाता है? यह प्रश्न विचारणीय है। यह आप जो सोचते हैं वह भी सत्य हो सकता है। किन्तु यह विषय लेने की इच्छा मेरे मन में क्यों आई? क्योंकि हमें एक बात का आश्चर्य हुआ कि पंजाब के लोगों को आतंकवाद के इस सत्य का साक्षात्कार इतनी देरी से क्यों हुआ? यह तो पहले से ही, जब से संघ चला है ऐसे ही है। तो इस बात को समझने में पंजाब के लोगों को और बाहर वालों को इतनी देर लग गई इसी का हमें आश्चर्य हुआ और इसके कारण ऐसा शक हुआ कि शायद यह कायरता है। इस सत्य में भी एक मैथेड है। मैथेड जो पंजाब के लोगों को बताना होगा। ये समझना चाहिए कि यदि इस सत्य का साक्षात्कार बड़ी देरी से हुआ तो इसके पीछे भी मैथेड है। इसके पीछे जो मैथेड है इतना ही केवल बताने के लिए आज का बौद्धिक वर्ग है।

आपको तो पता अब चला मेरे कान में जब यह बात आई तो मैं छोटा था और यह मेरे लिए समझना भी कठिन था। आठ-नौ साल की मेरी उम्र थी उस समय पहली बार ऐसी बात हमारे ज्ञान में आई जिसको मै पूरी तरह नहीं समझ सका। अब समझ सका हूँ। ऐसा था कि 1925

में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्माण हुआ। परम पूजनीय डाक्टर जी राजनैतिक दृष्टि से डा. मुंजे के ग्रुप में थे। आपने जीवनी में डा. मुंजे का नाम पढ़ा होगा। डा. मुंजे के ग्रुप में डाक्टर जी एक श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता थे। मेरे पिता जी, ऐसे श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता नहीं थे। लेकिन डा. मुंजे के ग्रुप में छोटा बड़ा काम सामान्य कार्यकर्त्ता के रूप में हमारे पिता जी भी कर रहे थे। डाक्टर जी के समकालीन थे। डाक्टर जी से सम्बन्ध भी था। पिता जी के मन में डाक्टर जी के प्रति बहुत श्रद्धा थी, प्रेम भी था, नाराजगी भी थी। और यह बात केवल हमारे पिता जी को नहीं थी। राजनैतिक दृष्टि से डाक्टर जी डा. मुंजे के ग्रुप में थे, सारे हिन्दुत्वादी थे। उनमें से कई लोगों के मन में डाक्टर जी के प्रति ऐसी ही प्रतिक्रिया थी- प्रेम एवं श्रद्धा के साथ-साथ नाराजगी भी। हमारे यहाँ जो लोग बात करते थे तो इसमें बस इतना था। दोनों बातें डाक्टर जी के बारे में है और कारण क्या था जो वे बोलते थे। अब हमें समझ में आ रहा है। कहते थे कि डा. हेडगेवार इतना अच्छा आदमी था। प्रखर देश भक्त, प्रखर हिन्दुत्व निष्ठ, बहुत जोशीला, बंगाल में जाकर प्रत्यक्ष क्रान्तिकारी दल में जिसने हिस्सा लिया है। बंगाल से वापस आने के बाद भी क्रान्तिकारी आन्दोलन चला रहा है। बंगाल और बाकी प्रदेशों के बीच ऑरगेनाईजेशन का काम डाक्टर जी के पास था। खासकर शस्त्रास्त्रों को इधर से उधर भेजने का काम डाक्टर जी ने बहुत साल तक किया। ऐसे प्रखर क्रान्तिकारी थे डाक्टर जी। फिर काँग्रेस के आन्दोलन में भी हिस्सा लिया। उनके भाषण कितने ओजस्वी होते थे यह तो सब को पता है। 1921 में जब उनको अरेस्ट किया गया और राजद्रोह का मामला उन पर दर्ज किया गया तब उन्होंने जो अपने बचाव में भाषण दिया उस पर कोर्ट ने अपने जजमैंट में लिखा कि उनका बचाव भाषण उनके मूल भाषण से ज्यादा आपत्तिजनक है। माने जिस भाषण का बचाव करने के लिए उन्होंने भाषण दिया वह बचाव का भाषण मूल भाषण से भी ज्यादा राजद्रोह कारक था। ऐसा

जज साहब ने कहा।

एक ही ग्रुप के होने के कारण पिता जी भी जानते थे कि बड़े तेजस्वी, प्रखर ओजस्वी भाषण डाक्टर जी के होते थे। अब यह शिकायत करने लगे कि जब संघ की स्थापना हो गई तो उल्टा ही हुआ। उनके भाषण में कोई प्रखरता नहीं रही, तेजस्विता नहीं रही। जैसे ग्रामोफोन में रिकार्ड लगा दी है कि हिन्दू समाज है इसका संगठन करना चाहिए। तो इससे कोई तेज तप होता है क्या? इसके कारण कोई जोश आ सकता है क्या? यही आदमी जो 1925 से पहले इतने जोशीले भाषण देता था आज ऐसे ढीले भाषण दे रहे हैं। केवल हिन्दू संगठन बस इसके सिवाय कुछ नहीं। पहले तो अंग्रजों को गाली देना, ये करना, वो करना सब होता था अब क्या हो गया है इसको? यह बात मन में आती थी। क्रान्तिकारियों में हिस्सा लेना चल रहा था। सभी लोगों के साथ सम्बन्ध भी था। जैसे उदाहरण के लिए रामलाल वाजपेयी बड़े क्रान्तिकारी थे। फिर अमरीका में चले गए उनके साथ भी डाक्टर जी आना-जाना रखते थे। भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव में से राजगुरु थे, जिन्हें कई दिन तक अण्डरग्राउण्ड रखने का काम डाक्टर जी ने किया था। तरह- तरह के क्रान्तिकारियों के साथ उनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा। लेकिन अब भाषा इतनी मोडरेट, माइल्ड, सौम्य। क्या हो गया इसको? यह मेरे पिता जी के दोस्त भी कहते थे और फिर उनको एक बात का आश्चर्य हुआ।

1927 में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ। इन दंगों में हिन्दुओं ने इतनी मार दी मुसलमानों को कि मुसलमान सर नहीं उठा सका। यह इसी के कारण सम्भव था कि 25 में जो संघ का प्रारम्भ हुआ वह जवान लोगों का गुट था। उसी गुट के कारण मुसलमानों को इतनी मार पड़ी। ये सब जानते थे। क्या डा. मुंजे क्या उनके ग्रुप के लोग। हमारे पिता जी बगैरा

भी इस राय के थे कि भई ये जो डाक्टर जी ने अखाड़ा खड़ा किया था इसी अखाड़े के कारण मुसलमानों की पिटाई हुई है। तो यह डंके की चोट पर कहना चाहिए। हम कोई झूठ नहीं बोल रहे, बात सही है लेकिन डा. हेडगेवार यह भी नहीं बोल रहे। वे कह रहे हैं कि जो विजय हिन्दुओं को नागपुर में हुई वह हिन्दू समाज के पराक्रम के कारण हुई। अरे पराक्रम तो तुम्हारे लोगों का था स्वयंसेवकों का था क्यों नहीं अपनाते उसको। क्यों नहीं बताते कि हमारे कारण हुआ है। लेकिन इतनी बुद्धिमानी डा. हेडगेवार जी में नहीं थी। वह कहते थे कि हिन्दू समाज के पराक्रम के कारण ये हिन्दुओं की विजय हुई है। और आपने देखा होगा कि परम पूजनीय डा. जी का या गुरुजी का या बाला साहब जी का कोई ऐसा वाक्य नहीं है जिसमें उन्होंने कहा हो कि हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नाम की संस्था को इतना प्रबल बनाएँगे कि दुनिया में कोई भी हमारी तरफ तिरछी नज़र से देख नहीं सकेगा। ऐसा किसी ने कहा था क्या? उन्होंने कहा था, समाज को इतना प्रबल बनाएँगे कि हिन्दू समाज की तरफ तिरछी नज़र से देखना सम्भव न होगा। अब बारीकी है पर समझने लायक है। तो दंगे में आपके ही लोगों के कारण यशस्वी हुए क्यों उसको ओन नहीं कर रहे? क्या ढीला आदमी हो गया है। एक समय का क्रान्तिकारी। तो यह नाराजगी इन लोगों में थी। खैर मैं तो आठ-नौ साल का था। इसलिए उस समय थोड़ा-थोड़ा सुना और अब उसका अर्थ सन्दर्भ समझ रहा हूँ। उस समय तो कुछ नहीं समझता था।

भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव को फाँसी की सजा हुई। सारे देश में उसकी प्रतिक्रिया हुई और उसके कारण शाखा में किशोर स्वयंसेवक बढ़ने लगे थे। कुछ युवा अवस्था में प्रवेश करने वाले थे। ऐसे कुछ स्वयंसेवकों के मन में भी यह विचार आया कि अब यह शान्ति से होने

वाला काम नहीं। हमको भी कुछ ऐसा क्रान्तिकारी कार्य करना चाहिए। बम कैसे बनाना, पिस्तौल कैसे लाना, बन्दूक कैसे लाना वगैरा। सब शुरू हुआ। डा. जी की विशेषता थी कि उनका सभी स्तर पर प्रत्यक्ष सम्पर्क रहता था। इसके कारण स्वयंसेवकों के मन में क्या चल रहा है वह जानते थे। ऐसा सोचने वाले स्वयंसेवकों का जो ग्रुप था उनमें से कुछ लोगों की आज मृत्यु हो गई है। कुछ लोग आज संघ के उच्च पदों पर भी हैं। लेकिन उस समय किशोर स्वयंसेवक, युवा अवस्था में पदार्पण करने वाले स्वयंसेवकों में ये सारा चल रहा था। डा. जी को किसी ने सीधा ये बोला तो नहीं कि पिस्तौल इकट्ठा कैसे किया जाए? बम्ब कैसे बनाते हैं? तो डा. जी ने इन लोगों को बुलाया और एक रात कुछ ऐसी चर्चा की जिससे सभी को आश्चर्य हुआ। सभी कह रहे थे डा. जी सब काम आपने भी तो किया है। अभी तक तो आप भी क्रान्तिकारियों के भक्त थे। वही काम हम कर रहे हैं और आप हमें कह रहे हैं कि इस काम में नहीं लगना चाहिए। तब डा. जी ने कहा कि मैं ये काम कर चुका हूँ इसलिए मैं तुम्हें कह रहा हूँ। ये काम तुम्हें नहीं करना चाहिए। इस काम की उपयोगिता कितनी है और उपयोगिता की मर्यादा कितनी है मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। क्योंकि सालों तक मैंने क्रान्ति कार्य किया है। तुम बच्चे अभी सीख रहे हो मैंने तो सालों तक यह काम किया है इसलिए इसकी उपयोगिताओं की सीमाएँ जान ली हैं। यह अपना रास्ता नहीं। सबको आश्चर्य हुआ। खैर शस्त्र की बात छोड़ो, बम-पिस्तौल की बात छोड़ो।

संघ केवल स्वयंसेवक निर्माण करेगा –

1931 में काँग्रेस का आन्दोलन हुआ। आन्दोलन में डा. जी स्वयं शामिल हुए। डा. जी के साथ संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी थे। लेकिन

जाते हुए उन्होंने कहा कि मैं जब आन्दोलन में हिस्सा ले रहा हूँ तब सरसंघचालक पद छोड़ रहा हूँ। संघ का इस आन्दोलन के साथ सम्बन्ध नहीं इसलिए मैं सरसंघचालक पद छोड़ रहा हूँ। डा. परांजपे दूसरे सरसंघचालक बना दिए और कहा मैं तो सत्याग्रह में हिस्सा लेकर जेल में जाऊँगा, लेकिन बेटा तुम सबने शाखा ही चलानी है और कोई काम नहीं करना है। सब को आश्चर्य हुआ। यह क्या नीति है कि आप सत्याग्रह में हिस्सा लेकर जेल में जा रहे हैं और हमको कह रहे हैं कि नहीं कोई भला काम नहीं करो। उस समय दक्ष–आरम शब्द नहीं था, केवल शाखा चलाना था। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर भाग्य नगर सत्याग्रह आया याने हैदराबाद का। याने निज़ाम के खिलाफ। अब इसमें संघ ने कोई भूमिका नहीं निभाई। संघ कोई भूमिका लेता नहीं है। संघ केवल संस्कार, स्वयंसेवक और संगठन का कार्य करता है। यही संघ का दायरा है। संघ से प्रेरणा और संस्कार प्राप्त किए हुए स्वयंसेवकों को दुनियाभर के सब काम करना है। कोई काम वर्जित नहीं है। सभी काम स्वयंसेवक करें। संघ नहीं करेगा। दुनिया में जो काम करने योग्य हैं वह स्वयंसेवक करें। संघ से प्रेरणा और संस्कार प्राप्त किए हुए स्वयंसेवकों को दुनियाभर के अच्छे काम करना है। भाग्य नगर सत्याग्रह अच्छा काम था, संघ ने उसमें हिस्सा नहीं लिया। यह सत्याग्रह हिन्दू सभा और आर्य समाज के लोगों ने चलाया था। हिन्दू सभा के लोगों ने बहुत दबाव डाला। डा. जी ने कहा संघ कभी हिस्सा नहीं लेगा, लेकिन आपको कितने लोग चाहिए? बताओ, स्वयंसेवक जाएँगे। माननीय भैया जी दाणी, दीनदयाल जी और सैकड़ों स्वयंसेवक उसमें गए। संघ ने हिस्सा नहीं लिया। कोई स्टेटमैंट जारी नहीं किया। अब जब सत्याग्रह की समाप्ति हुई तो हिन्दू सभा का जो मुखपत्र था उसमें आया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसमें प्रत्यक्ष सहकार्य किया है। प्रत्यक्ष सहभाग संघ ने किया है। अब

श्रेय मिलने वाला था। डा. जी ने वह श्रेय भी छोड़ दिया। डा. जी ने दूसरा स्टेटमैंट जारी किया। उनको पत्र भेजा कि इसको प्रचारित करो कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसमें हिस्सा नहीं लिया। लेकिन हाँ यह हिन्दुत्व का केस था, हमारे स्वयंसेवक व्यक्तिगत रूप से इसमें गए। सैकड़ों की संख्या में गए। लेकिन संघ इसमें सहभागी नहीं था। ऐसा उन्होंने पत्र लिखा और कहा कि इसे प्रकाशित करो। माने श्रेय मिलने वाला था वह भी खो बैठे। ऐसी बुद्धिहीनता के कई लक्षण संघ के इतिहास में हैं। जहाँ राजनैतिक लोग सभी बातों का श्रेय लेने की कोशिश करते हैं वहाँ उन्होंने यह नहीं किया। और केवल इसी श्रंखला में यह बात मैं बता दूँ कि हिन्दू सभा की ओर से कलकत्ता के अधिवेशन में यह तय हुआ कि एक राष्ट्रीय सेना खड़ी की जाए। राम सेना उसका नाम रखा। जिसका कमांडर-इन-चीफ डा. हेडगेवार जी रहेंगे। कितनी बड़ी बात थी। डा. जी ने स्टेटमैंट दे दिया कि मेरा नाम जो दिया है वह मेरी इजाजत के बगैर दिया है। मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं। कमांडर-इन-चीफ होना कोई छोटा सम्मान है क्या? लेकिन वह भी छोड़ दिया। पता नहीं क्या उनके दिमाग में चलता था? आजकल तो म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन का एक बार चुनाव लड़ने वाला भी ऐसी गलती नहीं करेगा। इतनी बड़ी-बड़ी गलतियाँ डा. हेडगेवार जी ने की हैं।

जोशीला भाषण और मर्द नेतृत्व में अन्तर -

खैर उस समय हिन्दुत्ववादी व्यक्ति संघ में थे और संघ के बाहर भी थे। और यह बड़े जोशीले थे। डा. जी के भाषण के बारे में हमारे पिता जी कहते थे कि ये आदमी ढीला भाषण देता है। तेजस्वी भाषण देने वाले भी बहुत थे। और मेरी उमर उस समय 18-19 साल की थी। उस समय एक ओजस्वी नेता, ओजस्वी वक्ता का थोड़ा सा परिचय मुझे

मिला। उस समय हमको कुछ समझ नहीं थी। मुझे उसके पी.ए. के नाते, ओडरली के नाते दिया गया। उनका दौरा भाग्य नगर सत्याग्रह के प्रचार करने के लिए हो रहा था। वह बड़े श्रेष्ठ नेता थे, अच्छे वक्ता थे, बड़े जोशीले वक्ता थे, लोग कहते थे कि यह आदमी ऐसा भाषण देता कि इसके भाषण के कारण मुर्दा भी एक मिनट के लिए उठकर खड़ा हो जाएगा। इतना तेजस्वी भाषण वह देते थे। अब मुझे उनका आदेश मानना, कपड़े सम्भालना, जूते सम्भालना, जूतों पर पालिश करना, उनके साथ काम करने को दिया था। मैं छोटा लड़का था। 18 साल का। उनका भाषण बड़ा जोशीला होता था उदाहरण के लिए बताता हूँ वो कहते थे कि हिन्दुओं के सर्वस्व समर्पण करने की यह बारी आई है अवसर आया है। अब समरांगण के कागज पर, समरांगण माने लड़ाई का मैदान, तो लड़ाई का मैदान यह एक कागज है आपका और हमारा खून यही स्याही है आपकी और हमारी हड्डियाँ यही लेखनी हैं, लेखनी यानि पैन है और इससे हिन्दू-राष्ट्र का इतिहास लिखना है। बड़ा तेजस्वी भाषण। एक जगह विरोध हुआ। उनको पता नहीं था। हम लोगों ने सोचा, है तो यह मर्द आदमी। जोशीला आदमी है। इनको थोड़ी सी आहट लग गई कि विरोध होने वाला है और जैसे ही कुछ जगह पर लोगों ने काले झण्डे दिखाए और शोरगुल मचाना शुरू किया तो यह समरांगण उनका कागज, रक्त की स्याही और हड्डियों की लेखनी वाला जो ये महान जोशीला वक्ता थे जैसे ही एक कोने में शोरगुल हुआ तो इतनी तेजी से मैदान छोड़कर भागने लगे कि हम लोगों को बड़ी शर्म आने लगी कि ये हमारे नेता हैं। तेजस्वी ओजस्वी नेता हैं, जोशीले नेता हैं। लेकिन जैसे उनको लगा कि कहीं से पत्थर आ रहे हैं तो एकदम भागकर मैदान से चले जाने लगे। पहली बार इस छोटी उमर में मुझे आभास हुआ कि जोशीला भाषण और वास्तव में मर्द नेतृत्व इसमें कुछ अन्तर होगा। ऐसा थोड़ा-सा

आभास मुझे उस समय हुआ। लेकिन एक बात उस समय हमारे मन में भी रहती थी कि हिन्दुत्व का जागरण करना है तो बहुत तेजस्वी भाषा में करना ही चाहिए। नहीं तो लोगों में वैसा जोश कैसे आएगा? और डा. जी को हम हमेशा से सुनते थे वो ही रट्टा हुआ भाषण था। हिन्दू है हिन्दुत्व है संघ हिन्दुओं का संगठन है। यह आवश्यक है। यही मामूली बातें। कहीं जोश नहीं, आवेश नहीं, कहीं कुछ नहीं।

हिन्दू मानसिकता -

उस समय जैसे आज भी हैं। उस समय एक चर्चा थी कि हिन्दुओं का जागरण करने का रास्ता क्या है? आप जानते हैं कि हिन्दू सभा के लोग बहुत जोशीले भाषण देते थे। गाँधी जी की नीति हिन्दुत्व विरोधी थी। जब मैं गाँधी जी के बारे में बोलता हूँ तो लोग कहते हैं आप क्या विचित्र बोल रहे हैं? हम कहते हैं कि गाँधी जी सांस्कृतिक दृष्टि से श्रेष्ठ हिन्दुओं में से एक थे। किन्तु राजनैतिक दृष्टि से हिन्दुओं के सबसे बड़े दुश्मन गाँधी जी थे। लोग कहते हैं यह परस्पर विरोधी वक्तव्य हैं। हम कहते हैं वास्तविकता यही है। सांस्कृतिक दृष्टि से गाँधी जी हिन्दुओं में सबसे श्रेष्ठ थे किन्तु राजनैतिक दृष्टि से हिन्दुत्व के और हिन्दू राष्ट्र के सबसे बड़े विरोधी। उनकी इसी दृष्टि के कारण पाकिस्तान निर्माण हो सका। दोनों बातें सत्य हैं। जब गाँधी जी ने मुस्लिम-तुष्टिकरण शुरू कर दिया तो भी बहुत से हिन्दू गाँधी जी के साथ गए। सावरकर जी जेल से छूटकर आए। उनका प्रभावी व्यक्तित्व था। बंगाल, तमिलनाडु, पंजाब सब जगह के दौरे हुए। हजारों लाखों की संख्या में लोगों ने भाग लिया, तालियाँ बजाईं लेकिन हिन्दू गाँधी जी को समर्थन देते रहे। सावरकर जी को, हिन्दू सभा वालों को समर्थन नहीं मिला। कट्टर हिन्दू *थे हिन्दू सभा वाले। भाषणों में जोशीले, ओजस्वी, तेजस्वी आदि।* उनको

हिन्दू समाज का समर्थन नहीं मिला। वास्तव में जिनकी गलत नीतियों के कारण हिन्दुस्थान का विभाजन हुआ, उन्हीं गाँधी जी को हिन्दू समाज का समर्थन मिलता गया। लेकिन हिन्दू समाज के ओजस्वी नेताओं ने इसका भी कभी विचार नहीं किया। यह हिन्दू मानसिकता क्या है? मैं समझता हूँ कि हमारे लिए भी यह सोचने की बात है कि हिन्दू मानसिकता क्या है? यहाँ बहुत लोग गलती करते हैं। अभी राम जन्मभूमि के कारण एक बड़ी विजय प्राप्त हुई। यह ऐतिहासिक क्षण का दिन है। हिन्दू समाज में अब तक जो नीचे जाने वाली बात थी किन्तु वह अब ऊपर जाना शुरू हो गया है। अब इसके कारण आनन्दित होना भी स्वाभाविक है। लेकिन हिन्दू मानसिकता क्या है?

एक छोटी सी बात मैं आपको बताऊँ। नवम्बर की सात तारीख को, दिल्ली के बोट क्लब पर बड़ी मीटिंग हुई। रज्जू भैया और मैं, हम दोनों आर.एस.एस. की ओर से बोलने वाले थे। सबसे कम प्रभावशाली भाषण हम दोनों का था। और सबसे प्रभावशाली भाषण एक अन्य नेता का था। लोग कहने लगे साहब नेता चाहिए तो ऐसा चाहिए। उन्होंने भाषण में कहा कि अब हिन्दू मरेगा नहीं मारेगा। अब हम बलिदान देने वाले नहीं हैं, बलिदान लेने वाले हैं। तालियाँ बजीं। मैं उनको पहचानता नहीं था। बाद में मैंने पूछा कि क्यों भाई ये कौन हैं? बोले कि ये फलानी-फलानी एक संस्था है उसके नेता हैं। हमने कहा कि मालूम होता है कि वह अयोध्या पहुँचे हुए हैं। बोले ना। मालूम होता है उत्तर प्रदेश में गए थे, बोले ना। शायद हो सकता है कि जो दिल्ली के नेता दिल्ली के बार्डर पर, गाजियाबाद पर ही अरेस्ट हो गए उस ग्रुप में ये थे? बोले ना-ना ये घर के बाहर गए ही नहीं। यहाँ तक कि चन्दा इकट्ठा करना था उसके लिए भी कभी किसी के यहाँ नहीं गए। आराम से घर बैठे थे। हमने कहा कि भाषण तो जोशीला करते हैं, काम नहीं करते।

लेकिन लोगों ने हमको बताया कि साहब नेता चाहिए तो ऐसा चाहिए। हम मरेंगे नहीं मारेंगे। हम नहीं कह सकते, मैं नहीं कह सकता। इसके कारण हमको तालियाँ नहीं मिलेंगी उनको बहुत तालियाँ मिलेंगी। डा. जी के साथ ऐसा नहीं था। वे जो बोलते थे अनुभव पर आधारित होता था।

कोई उथल-पुथल नहीं, वही कलकल करने वाला। संघ द्वारा ऐसा ही चलता था। और यहाँ ओजस्वी, तेजस्वी भाषण होते थे। लेकिन हिन्दू मानसिकता का पता नहीं। जैसे मैंने कहा यह जो प्रभावी भाषण हुआ 7 तारीख का। उसके बाद कुछ ओजस्वी लोग हमको मिले। मैंने उनको कहा कि भई हिन्दू मन को तुमने समझ लिया है क्या? बोले, क्या है? अब तो हिन्दुत्व की लहर आ गई है। हमने कहा कि तुम्हारा सम्बन्ध है क्या धरती के साथ? हमारा है। हम सबके साथ मिलते हैं। बोले हाँ-हाँ सारा हिन्दुस्थान अब हिन्दुत्व मय हो गया। हमने कहा ऐसा मत समझो तुम हवा में छलांगें मत लगाओ।

हिन्दू मानसिकता के तीन चक्र -

अच्छा है हिन्दुत्व की लहर आ गई है और मैं मानता हूँ कि 30 अक्टूबर को हिन्दू इतिहास ने करवट बदली है, एक नया मोड़ लिया है, अब हम लोग नई दिशा में जा रहे हैं जो विजय की दिशा है इसमें कोई शक नहीं है। जितना तुम्हारे मन में विश्वास है उतना मेरे मन में भी कानफिडैंस है। लेकिन तुम्हारे मन में जो यूफोरिया है। यूफोरिया एक ऐसा अंग्रेजी शब्द है जिसका ठीक हिन्दी में भाषान्तर नहीं है लेकिन यूफोरिया का मतलब होता है बहुत-हर्ष, हर्ष की वायु, उन्माद ऐसा जो होता है उसको यूफोरिया कहते हैं। तो हमने कहा कि इतनी बड़ी घटना अयोध्या में हुई मेरे मन में भी उसके लिए गर्व है, गौरव है। लेकिन तुम्हारे दिल

में यूफोरिया है। बोले क्यों? हमने कहा समझ लो तुम हिन्दू मन को जानते नहीं। आज हमारे साथ जो लोग आए हैं वे सारे के सारे उस अर्थ में हिन्दुत्ववादी नहीं हैं जिस अर्थ में तुम और हम हैं। इसमें तीन चक्रों की कल्पना करो। एक चक्र है संघ, संघ-परिवार वाले लोग। ये हमेशा से स्थाई घेरा है। एक घेरा ऐसा है कि जो सीधा संघ और संघ-परिवार में नहीं है तो भी हमेशा संकट के समय में हमारा साथ देते रहे हैं। यह भी स्थाई घेरा है। सहानुभूति रखने वाला स्थाई घेरा है। लेकिन अब जो बड़ा घेरा जिसको तुम लहर कह रहे हो। इस घेरे में आने वाले सभी के सभी लोग तुम्हारे और हमारे जैसे हिन्दुत्वनिष्ठ नहीं हैं। तो बोले क्या हैं? हमने कहा कि इसमें से बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो घटनाओं के कारण, हमारे प्रचार के कारण, उनको ये पता चला है कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर नेता लोग मुस्लिम-तुष्टिकरण कर रहे हैं, हिन्दुओं के ऊपर अन्याय कर रहे हैं, इसके कारण हिन्दुओं के नेताओं के बारे में जिनके मन में सहानुभूति आ गई है, ऐसा बड़ा घेरा है। ये हिन्दुत्वनिष्ठ तुम्हारे जैसा नहीं है। तुम कह रहे हो हिन्दुत्व की लहर है। किन्तु बाहर का स्वरूप समझ लो इसमें संघ और संघ-परिवार का घेरा स्थाई है। संकट के समय संघ पर पाबन्दी आई उस समय भी जो हमारे साथ सहानुभूति रखते थे वो स्थाई घेरे वाले हैं। लेकिन ये जो तीसरा बड़ा घेरा है जिसको तुम लहर कहते हो वे सारे एक जाति के लोग नहीं हैं। अलग-अलग हैं। दो तरह के। एक तो कुछ लोग हमारे जैसे हिन्दुत्ववादी हो गए लेकिन ज्यादातर लोग ऐसे हैं कि जो हमारे अर्थ में हिन्दुत्ववादी नहीं हैं लेकिन हिन्दुओं के प्रति जो अन्याय हो रहा है, वह ठीक नहीं, इसलिए आपका समर्थन कर रहे हैं। ऐसा एक बड़ा समूह है। और तुम तालियाँ लेने के लिए क्योंकि तालियाँ लेना है तो ये भाषा बड़ी उपयुक्त है अब हम मरेंगे नहीं मारेंगे। मारेंगे बोलने के बाद जो कट्टर लोग हैं वो तालियाँ बजाते हैं।

तालियाँ बजाते हैं तो वक्ता को लगता है कि मैं तो पापुलर हो रहा हूँ, वह ये नहीं जानता कि पचास लोग तालियाँ बजा रहे हैं लेकिन पाँच-सौ लोग जो सहानुभूति के नाते आज तुम्हारे साथ आ रहे हैं उनकी सहानुभूति नष्ट हो जाएगी, वे हम से दूर हो जाएँगे। ये विचार वक्ता के सामने नहीं आता, वह तो तालियाँ सुनने से खुश हो जाता है। हमने कहा कि ये तीसरा घेरा है इसका जरा तुम विचार करो। तुम हिन्दू मानसिकता को जानते नहीं। हमारे खिलाफ अन्याय हो रहा है यह समझ कर लोगों के मन में हमारे साथ सहानुभूति है। तुम यदि ऐसी भाषा बोलोगे, ये सारे लोग आपका साथ छोड़ देंगे।

तुम मामूली अनुभव देखो हिन्दू मानसिकता क्या है? मामूली अनुभव है कि किसी मौहल्ले में गुण्डा रहता है। सब लोग कहते हैं कि उसको पीटना चाहिए। सब एक मत हैं। और वास्तव में यदि लोग उसको पकड़ते हैं पिटाई करते हैं और इत्तिफाक से पिटाई करते-करते उसकी मृत्यु हो जाती है। आप देखिये आपको अनुभव आएगा कि लोग आ जाएँगे जो कहते थे कि इस साले की पिटाई होनी चाहिए, वही लोग कहेंगे कि इसकी पिटाई तो करनी चाहिए थी, लेकिन ज्यादा ही हो गया। इतना नहीं मारना चाहिए था। यह हिन्दू मन है। मैं जानता हूँ कि ये कोई अच्छी अवस्था नहीं है लेकिन हिन्दू मन जो है वो समझ कर चलना चाहिए।

संघ की प्रारम्भिक अवस्था में अकोला नाम के शहर में डा. जी गए थे, बैठक हुई। संघ की कल स्थापना होगी यहाँ तक बात आ गई। फिर संगठन के बारे में बातचीत हुई। लोगों ने कहा कि कल से शाखा शुरू होगी। लोग उठने लगे तो उठते-उठते ही कोने में से किसी ने कहा कि डा. आपने जो कहा वह ठीक है। कल से मैं भी शाखा पर आऊँगा,

लेकिन एक प्रश्न मन में है। बोले क्या है? तब तक लोग उठकर खड़े हो गए थे। डा. जी ने सब को बैठने के लिए नहीं कहा। वह भी खड़े रहे बाकी लोग भी खड़े थे। बोले बताओ तुम्हारा क्या प्रश्न है? डा. जी मेरे मन में ये आ रहा है कि सारे हिन्दू भाई संगठित हो जाएँगे, बेचारे मुसलमानों का क्या होगा? तो डा. जी ने हँसते-हँसते उनकी तरफ उंगली की और कहा कि यह हिन्दू मानसिकता समझनी चाहिए।

पिछले ग्यारह सौ से बारह सौ साल तक हिन्दुस्थान के कई भू-भाग पराए साम्राज्य के अन्तर्गत रहे। अंग्रजों के अधीन हम रहे। कुछ मुसलमान अलग-अलग मुगल, अफगान, तुर्क बगैरा के अधीन रहे। तो गुलामी के कारण हमारी अग्नि पर कुछ राख आ गई है। आप बड़े कट्टर हिन्दुत्ववादी हैं मैं मानता हूँ। लेकिन सारे आपके जैसे नहीं हैं। उनकी अग्नि पर राख आ गई है। आपकी राख आर.एस.एस. के कारण नष्ट हो गई है। उड़ गई है। उनकी राख अभी तक है। तो मानसिकता क्या है? यह समझते हुए। ठीक है उनकी मानसिकता हमें बदलनी है तो भी जब तक वह मानसिकता है तब तक उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना पड़ेगा। लेकिन हिन्दू सभा के लोगों का व्यवहार ऐसा नहीं था वे अपने आवेश में आ जाते थे। वैसी ही बात करते थे, इसके कारण बाकी उनके साथ नहीं गए, ऐसे प्रवाह के साथ गए जिसकी आगे चलकर पाकिस्तान में परिणति हुई। हिन्दू मानसिकता क्या है? उसका विचार करना चाहिए। ऐसी बातों को रिएक्ट करने वाला हिन्दू मन नहीं है। उसको तेजस्वी बनाना है। हिन्दू को ओजस्वी बनाना है। उसके लिए हमारे प्रयास चल रहे हैं।

संघ का काम है स्वयंसेवक निर्माण -

65 साल से हमारे प्रयास चल रहे हैं अब ये लम्बी अवधि है।

1100, 1200 साल के खराब संस्कार, जिन पर राख जम गई है। 1100, 1200 साल की राख एकदम उड़ने वाली नहीं है। मुझे मालूम है कि कई लोग ये जो संघ की प्रोग्रेस है इससे ऊब जाते हैं। और यह पंजाब की बात नहीं बाहर भी ऐसा होता है। अभी-अभी की बात है। इस कारसेवा के लिए हम लोग जब गए तो अरैस्ट हो गए। छूट कर आए तो मैं गोरखपुर गया था। एक उत्सव था। गोरखपुर में रेलवे यूनियन में एक अपने संघ के कार्यकर्त्ता हमारे विरोधी कैम्प में पदाधिकारी हैं उन्होंने हमको कहा ठेंगड़ी जी आप हमें आदेश देंगे तो मैं अभी इस्तीफा देता हूँ। हमने कहा मैं आदेश नहीं देता। तुम्हारी जब इच्छा होगी तब देना, तो वह बोला मैं तो यहीं रहना सुविधाजनक समझता हूँ, सुविधाएँ हैं। तो हमने कहा कि अच्छे कार्यकर्त्ता बनो। जब-जब मैं गोरखपुर जाता था तब-तब वह कहता था कि ठेंगड़ी जी आप कुछ भी कहिए। प. पू. डा. जी से लेकर छोटे से छोटे आपके प्रचारक तक सबके विषय में मेरे मन में श्रद्धा है, आदर है। और यह मैं समझता हूँ कि संघ का ही रास्ता सही है। लेकिन कितनी देर हो गई। 60 साल से हम दक्ष-आरम कर रहे हैं। कुछ हो ही नहीं रहा। हमने कहा भई संघ करता ही नहीं तो होगा कैसे? वह क्यों नहीं कर रहा? उसने पूछा। हमने कहा हम संघ को कोई भला काम करने ही नहीं देते। हमने तो विभाजन करके रखा है कि संघ ने तुमको और हमको पैदा करना है। तुम भी स्वयंसेवक हम भी स्वयंसेवक। संघ का काम है कि तुमको और हमको संस्कार देना। तुम्हारा हमारा काम है कोई भला काम दुनिया का करना। अब तुम हम नहीं कर रहे तो क्या होगा? खैर ऐसी आपस में बातचीत चली। इस बार वह मिले 30 अक्टूबर के बाद। उन्होंने कहा ठेंगड़ी जी मैं माफी माँगने के लिए आया हूँ। हमने कहा क्यों? बोले इतने दिन तक मैं सोचता था कि संघ कार्य निरुपयोगी है। कुछ इसका उपयोग नहीं है। अब पता चला कि संघ कार्य का क्या

प्रभाव है। बोले 65 साल तक दक्ष-आरम न करते तो ये 30 अक्टूबर का चमत्कार नहीं हो सकता था। अब मैं समझ रहा हूँ। हुआ तो 30 अक्टूबर को। 65 साल के बाद हुआ है। लेकिन उसकी पृष्ठभूमि जो है उसकी भूमिका है, उसकी नींव है वह जो 65 साल से दक्ष-आरम किया। मैं समझ रहा हूँ। मैं अब माफी माँगने के लिए आया हूँ। लेकिन कुल मिलाकर संघ का काम बड़ा है इसमें कोई गर्मी नहीं है, जोश नहीं है। वही दक्ष है वही आरम है। कितने दिन करेंगे। यार बहुत हो गया। बगैरा-बगैरा पंजाब में तो यह बहुत चलता है। हिन्दू मानसिकता क्या है, यह ना समझने के करण।

आवेश और जोश के साथ सोच भी आवश्यक -

एक तरफ बैरिस्टर जिन्ना का पाकिस्तान की तरफ वह सारा चल रहा था। उसका प्रतिरोध करने के लिए हिन्दू सभा के लोग उतने ही ओजस्वी भाषण देते थे परन्तु हिन्दू उधर नहीं गया। हिन्दू सभा के पास बहुत थोड़े लोग रहे। बाकी लोग काँग्रेस के साथ गए। अब ये हिन्दू मानसिकता बदलनी है। वह मानसिकता क्या है यह समझ कर चलना चाहिए। हिन्दू सभा ने नहीं किया। संघ का अपना काम धीरे-धीरे चलता रहा। पाकिस्तान बनने के समय, हमें भी कुछ लोगों ने कहा उस समय तो मैं उमर में 27 साल का था। संघ प्रचारक भी था। उन्होंने कहा संघ इस समय कर्त्तव्य-च्युत रहा है। विरोध करने के लिए संघ की फौज आगे आनी चाहिए। हमने कहा काफी रोमांचक आदमी दिखता है, थे तो बूढ़े लेकिन रोमांचक थे। तो उन्होंने कहा कि संघ की फौज लेकर आपके गोलवलकर जी को सामने आना चाहिए। हमने दो बार सुन लिया। बाद में फिर कहा आप क्या बोल रहे हैं, आपके ख्याल में है क्या? उनकी बातचीत से मुझे ऐसा पता लगा कि संघ को कुछ करना चाहिए, ऐसा

कहने वाले लोग ऐसे रोमांचक थे कि उनके दिमाग में एक चित्र था जैसे पानीपत की तीसरी लड़ाई के समय एक तरफ अहमदशाह अब्दाली का कैम्प था और एक तरफ हिन्दुओं का कैम्प था। तो वैसे ही पाकिस्तान बनने के समय एक तरफ इकबाल और बैरिस्टर जिन्ना का कैम्प रहेगा। उनकी मुसलमान फौज रहेगी दूसरी तरफ गोलवलकर जी की हिन्दू फौज रहेगी, दोनों का मुकाबला होगा और दोनों की टक्कर में हिन्दुओं को विजय का विश्वास लेकर लड़ना चाहिए। ऐसा कुछ चित्र उनके मन में मैंने कहा ये चित्र आपका सही है क्या? बोले क्यों नहीं, संघ के पास ताकत है। हमने कहा–है। लेकिन मुकाबला बैरिस्टर जिन्ना और इकबाल की सेना से होगा क्या? वे ही पाकिस्तान की माँग कर रहे हैं? हमने कहा यह तुम्हारा अभिमान है। उनके साथ नहीं होगा मुकाबला। संघ की सेना खड़ी हो सकती है। वह नित्यसिद्ध है। लेकिन मुकाबला जिन्ना और इकबाल की फौज के साथ नहीं होगा। तो किसके साथ होगा? हमने कहा ये जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल की सेना के साथ होगा। उस समय अंतरिम सरकार थी। ये जो आवेश और जोश वाले लोग सोचते ही नहीं। उस समय अन्तरिम सरकार थी और अन्तरिम सरकार के पास सेना की कमाण्ड थी, पुलिस उनके पास थी और कोई भी कुछ भी करता तो पहले मुकाबला अन्तरिम सेना के साथ होता। नेहरू और पटेल की फौज के साथ होता। जिन्ना और इकबाल तो अलग रहते।

जैसे जन्मभूमि के समय आपने देखा हिन्दुओं का मुकाबला हुआ। किससे हुआ? सैयद शहाबुद्दीन से हमारा झगड़ा हुआ क्या अयोध्या में? शाही इमाम से झगड़ा हुआ क्या? झगड़ा हुआ मुलायम सिंह से और विश्वनाथ प्रताप सिंह की फौज से। आप समझ गए ना। अयोध्या में जो झगड़ा हुआ, हिन्दू कारसेवकों का वह सैयद शहाबुद्दीन के साथ नहीं था और शाही इमाम के साथ नहीं था। ये जो शाही इमाम और शहाबुद्दीन

से भी ज्यादा मुसलमान विश्वनाथ प्रताप सिंह और मुलायम सिंह यादव जैसे हैं, इनकी पुलिस और इनके अर्ध-सैनिक बलों से ये सारा संघर्ष करना पड़ा। वही बात उस समय थी। उनके ख्याल में नहीं आई। जोश में थे। और जोश में थे इसके कारण उन्होंने कहा कि इस समय आप झगड़े के लिए खड़े क्यों नहीं होते। हमने कहा भी किसके साथ झगड़ा हुआ। मुसलमानों के साथ होगा हम समझ सकते हैं। वे तो अलग रहेंगे तमाशा देखेंगे। जैसे दो नवम्बर को लोग मारे गए। मारने वालों में सैयद शहाबुद्दीन, शाही इमाम नहीं थे वो तो तमाशा देख रहे थे। मुलायम सिंह और वी.पी. सिंह की ही सेना ने हमारे निहत्थे लोगों पर गोलियाँ झाड़ीं और ये सारे जो शाही इमाम बगैरा थे, बाहर से तमाशा देख रहे थे। वही हाल उस समय हो जाता। लेकिन जो आवेश में हैं उनके लिए यह सोच विचार वर्जित है, परहेज है, वे सोच विचार करते ही नहीं। आवेश में आकर सारी बातें बोलते हैं। उस समय परम पूज्य गुरुजी के जो भाषण होते थे। हमें वह सूचना देते थे। क्योंकि उनको मालूम था धरती पर क्या चल रहा है। वे कहते थे कि जन-जागरण का दबाव नेताओं पर आना चाहिए। और ये विभाजन की बात हटनी चाहिए। लेकिन साथ ही साथ ये कहते थे कि संयमपूर्ण व्यवहार करो। गुरुजी के सारे भाषण उस समय के ऐसे थे। लेकिन जो हमसे भी ज्यादा कट्टर लोग हैं वे संयम और दुर्बलता को एक ही मानते हैं। संयम यानि कि उनको तो लगता है कि ये कमजोर है, दुर्बल है, नामर्द है। और संघ के खिलाफ फिर बात आती है कि इतनी बड़ी शक्ति आपके पास है आप कुछ नहीं करेंगे ये बात आई। पर संघ का जो अपना मार्ग है, मार्ग से चला है वह मार्ग क्या है ये सब जानते हैं। लेकिन ये जोश, ये धरती के साथ सम्पर्क नहीं, हवा में छलांगें लगा रहे हैं। हिन्दू मानसिकता क्या है? इसका पता नहीं।

जिसके पास पूँजी नहीं उसका क्या लुटेगा? -

विभाजन के बाद 55 करोड़ रुपये जब पाकिस्तान को देने का सवाल आया। सारे गाँधी जी से नाराज हुए। अखबारों ने गाँधी जी के खिलाफ लिखा। उन्होंने अपना अनशन शुरू किया तो सबने उनके खिलाफ लिखा, यहाँ तक अखबारों में यह आया था कि सरदार पटेल और नेहरू भी उनके खिलाफ हो गए हैं और फिर हवा यह उठी कि सरदार पटेल ने यह कहा कि ये बूढ़ा जाता क्यों नहीं है? सारे लोग ये कहने लगे कि ये जितनी जल्दी जाएगा उतना अच्छा होगा। हमारे मर्द लोगों को, जोश खरोश वाले लोगों को लगा कि बस सारा देश हमारे साथ है। मैंने आपको कहा कि हिन्दू मानसिकता यह है कि साले की पिटाई होनी चाहिए यह सब कहेंगे, लेकिन पिटाई करते-करते मृत्यु हो जाए तो कहेंगे पिटाई तो करनी चाहिए थी पर ये जरा ज्यादा ही हो गया। इतना नहीं होना चाहिए था। बेचारे को क्यों मारा? ये हिन्दू मानसिकता है। ये जोश खरोश वाले भूल गए। गाँधी जी की हत्या हुई। इन लोगों को बड़ा आनन्द हुआ कि पराक्रम किया है। पराक्रम की बात थी। हम भी यह सारा कार्य करने वाले लोगों को पराक्रमी ही समझते हैं। किन्तु हिसाब था क्या? हिन्दू मानसिकता की जानकारी थी क्या? ये जो पराक्रम हुआ इसके कारण हिन्दुत्व के कार्य को बढ़ावा मिला या हिन्दुत्व का कार्य पीछे गया। इसका हिसाब किया था क्या? हिसाब इन लोगों के पास नहीं होता। इसका एक प्रमुख कारण है कि इनके पास कोई संगठन ही नहीं। व्यक्तिगत कुछ लोग इकट्ठा हो जाते हैं। बड़े जोश खरोश में आ जाते हैं। आवेश में आ जाते हैं। उन्होंने कुछ किया तो भी उसका उनके ऊपर परिणाम इसलिए नहीं होगा कि इनका कोई संगठन ही नहीं है। अरे! जिसके पास पूँजी नहीं है, गरिमा जिसके पास नहीं है उसके यहाँ चोरी क्या होगी? जिसके पास पैसे हैं उसी के यहाँ चोरी हो सकती है, उसी

का नुकसान हो सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पास संगठन है नुकसान होगा तो संघ का हो सकता है। क्योंकि संघ की समाज में गरिमा है। अब जिनके पास कोई संगठन नहीं अकेले ही नेता बन गए, जोश में आ गए। कुछ कर दिया उनको फाँसी हो गई। हम उनका सम्मान करते हैं कि उन्होंने भी एक श्रेष्ठ काम किया है। काम खराब होगा लेकिन करना नहीं चाहिए था। लेकिन उनके पराक्रम को हम मान्यता देते हैं। कार्य की मान्यता नहीं देते। किन्तु नुकसान हिन्दुत्व का हुआ। यह हिन्दू मानसिकता को न समझने का परिणाम था। मैं समझता हूँ कि यहाँ जितने मेरी उमर के या मेरे से छोटे भी लोग होंगे उनको पता होगा कि इस घटना से पूर्व किस तरह से संघ का काम बढ़ रहा था और उसके बाद जो धक्का लगा उस धक्के में से सम्भलने में कितना समय संघ को लगा और प.पू. गुरुजी को कष्ट उठाने पड़े ये सब आप जानते हैं। तो काम तो हो गया। शायद कुछ लोगों ने तालियाँ भी बजाई होंगी। कुछ लोगों ने उसे महात्मा कहा लेकिन हिन्दू मानसिकता क्या है? यह न जानने के कारण इतना पराक्रम किया। शहादत हो गई। लेकिन जिस काम के लिए यह किया उस काम को धक्का लगा। क्योंकि हिन्दू मानसिकता ऐसी है। एक समय तो वल्लभ भाई पटेल ने भी कहा कि यह बुड्ढा जाएगा तो अच्छा होगा। जैसे वो चले गए वैसे एकदम हवा की लहर बदल गई। अरे! भई, चाहते थे लेकिन इतना नहीं होना चाहिए था और उसके कारण सारे कार्य को धक्का लगा। हम लोग जानते हैं।

आतंकवाद एक शास्त्र है -

अब यह हिन्दू मानसिकता को समझ कर आगे चलना है और पंजाब के बारे में भी यही लागू है। अब इस समस्या के बारे में हम पहले समझ लें। कुछ बातें जो मैंने पहले कहीं हैं वे मैं संक्षेप में बताना चाहता

हूँ। एक बात यह कि आतंकवाद एक शास्त्र है। दुनिया में यह शास्त्र विकसित हुआ है। प्रारम्भ इस शास्त्र का मध्य अमेरिका, लेटिन अमेरिकन देशों से हुआ। चीन वगैरा उसके आद्य-प्रणेता हैं। 1945 के पश्चात, दूसरे महायुद्ध के पश्चात यह शास्त्र प्रारम्भ हुआ और स्थल, काल तथा परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग देशों में उसको कुछ डाइमैंशनज आयाम जोड़े जाते रहे। यह बात सही है लेकिन आधार एक ही है। सब लोगों को मालूम है और यह जो शास्त्र है ये जानने वाले सब देशों में है। दूसरा भी है आतंकवाद को खत्म कैसे करना यह भी शास्त्र है और यह शास्त्र भी दुनिया की सभी सुसंस्कृत सरकारें जानती हैं। सभ्य सरकार दुनिया की सभी जानती हैं कि यह शास्त्र क्या है? अब इस दृष्टि से आतंकवाद जहाँ-जहाँ आता है वहाँ-वहाँ उसको समाप्त करने की जिम्मेदारी सरकार को ही लेनी पड़ती है। ऐसा दुनिया के इतिहास में आरम्भ से अब तक है। ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि सरकार तो गाफिल रहे और केवल जनता ने या किसी स्वयंसेवी संगठन ने आतंकवाद को समाप्त किया। एक भी उदाहरण दुनिया के इतिहास में नहीं। हाँ, ये है कि सरकार जब इच्छा शक्ति के साथ आगे बढ़ती है तो जनता उसको कोपरेट करती है सहयोग देती है। ऐसा तो हुआ है। लेकिन जहाँ सरकार गाफिल है। सरकार की इच्छाशक्ति नहीं, जनता ने ही ये सारा काम निपटा लिया ऐसा दुनिया के इतिहास में नहीं।

सरकार की इच्छाशक्ति से आतंकवाद का दमन -

हमारे इतिहास में उदाहरण है। 1949-48-47 में निजाम स्टेट थी। एक हिस्से में तेलंगाना जिले के कम्युनिस्टों ने अपना शासन निर्माण किया था। पार्लियामेंट सरक कम्युनिस्टों की चल रही थी और उस पार्लियामेंट सरकार के खिलाफ जनता कुछ नहीं कर सकती थी। निजाम

सरकार भी हतबल हो गई थी। लेकिन जैसे ही 15 सितम्बर को हमारी सेनाएँ स्टेट में घुस गईं। हैदराबाद स्टेट को हाथ में लिया तो सरदार पटेल के आदेश पर उसी सेना का एक हिस्सा उस एरिया में गया जहाँ कम्युनिस्टों की पार्लियामेंट सरकार चल रही थी। सरकार खत्म हुई। पूरी तरह से खत्म हुई। आज जो नक्सलवादी हैं वह दूसरा ऐलीमैंट है। उस समय वह पूरी तरह खत्म हुआ था। उसके कई वर्षों के बाद फिर से नक्सलवाद वहाँ आया है। लेकिन उस समय तो उस आन्दोलन को पूरा खत्म किया और ये भी जो नक्सलवाद बढ़ रहा है आप पढ़ते होंगे कि सरकार के प्रोत्साहन के कारण बढ़ रहा है। इसी के कारण चेन्ना रेड्डी को जाना पड़ा। तो आज का नक्सलवाद और उस समय की कम्युनिस्टों की पार्लियामेंट सरकार ये अलग-अलग बातें हैं किन्तु ये पार्लियामेंट सरकार जहाँ चल रही थी सेना के कारण उसको खत्म किया गया।

आन्ध्र में ऐसी ही पार्लियामेंट सरकार कुछ वर्ष पूर्व काचीनाडा और श्रीकाकुलम में नेक्सीलाइटिस ने चलाई थी। बैंगल राव, ये नाम आपने सुना होगा, वो मन्त्री भी रहे। बेंगलराव गृहमन्त्री बन गए उनकी इच्छाशक्ति प्रबल थी। उन्होंने श्रीकाकुलम और काचीनाडा में नैक्सलिस्म को आमूलचूल खत्म किया। उनका नाम लेने के लिए रहा नहीं कोई। अब चेन्ना रेड्डी के कारण जगह-जगह सारे गुण्डा लोग सामने आ गए बात अलग है। लेकिन बेंगलराव की जब इच्छाशक्ति थी गृहमन्त्री के नाते तो काचीनाडा और श्रीकाकुलम में पूरी तरह से उसको खत्म किया गया। तो बाहर भी ऐसा है। अपने यहाँ भी ऐसा है। इसके लिए मैंने उदाहरण कई बैठकों में दिया।

मैं दो उदाहरण इसके बारे में हमेशा देता रहा हूँ। पंजाब में भी कई जगह दिया कि सरकार की इच्छाशक्ति का मतलब क्या होता है।

बहुत लोग सोचते हैं कि साहब ऐसा तो नहीं कि आप अपनी जिम्मेदारी टालने के लिए सरकार पर शक कर रहे हैं। ऐसा नहीं। सरकार की इच्छाशक्ति से ही काम होता है। यदि जनता का सहयोग हुआ तो जल्दी काम होगा।

सरकार की इच्छाशक्ति -

सरकार की इच्छाशक्ति के दो उदाहरण मैंने पंजाब में इसके पहले भी दिए थे। एक उदाहरण दिया था कि जिस समय मैं पार्लियामेंट में आया तो उस समय नागालैण्ड का झगड़ा चल रहा था। नागालैण्ड में हमारी सेना थी। शस्त्रास्त्र थे तो भी नागालैण्ड-विद्रोही आगे बढ़ रहे थे। अब प्रश्न आया पार्लियामेंट में। मैं कार्यविधि नहीं जानता था। नया-नया गया था तो मैंने एकदम उठकर प्रश्न किया कि मन्त्री साहब नागालैण्ड की कुल जनसंख्या क्या है? बोले साढ़े चार लाख। और फिर प्रश्न किया कि साढ़े चार लाख है यह और हमारी इतनी सेना और हमारे शस्त्रास्त्र हैं तो फिर हम इनको काबू क्यों नहीं कर सकते। तो मन्त्री साहब ने जवाब दिया जो भू-प्रदेश नागालैण्ड का है वह ऊबड़-खाबड़ है। सेना तो वहाँ है पर इसके कारण हम नहीं काबू कर सकते। तब हमको भी पता नहीं था क्या है? बैठ गए। 20-22 दिन के बाद मेरे एक मित्र जो हमारे गाँव के थे और हमारे लंगोटिया यार थे, वह आर्मी में आफिसर थे और नागालैण्ड में उनका तबादला था। किसी काम से वह दिल्ली आए थे। सरकारी काम से। दिल्ली आने के बाद जब उनको पता चला कि अपना लंगोटिया यार एम.पी. हो गया है तो वह मिलने आए। रात में हम एक होटल में डिनर के लिए चले गए। हम तो आपस में अरे, तू रे, इसी भाषा में बोलते थे। हमने कहा के क्यों रे तुम लोग वहाँ इतनी सेना और शस्त्रास्त्र लेकर बैठे हो, मक्खी मारने का काम कर रहे हो क्या? तो बोले

क्यों? हमने कहा कि इतने शस्त्रास्त्र हैं, इतनी सेना है और साढ़े चार लाख की जनसंख्या है और तुम लोग कह रहे हो कि भू-भाग डिफीकल्ट है इसलिए हम काबू नहीं कर पा रहे। तो उनको गुस्सा आ गया। उसने कहा कोई सेना का अधिकारी यह नहीं कहेगा, सिपाही नहीं कहेगा कि भू-भाग डिफिकल्ट है इसके कारण हम काबू नहीं कर पा रहे। सेना ने नहीं कहा। मिनिस्टर ने कहा। बोले मिनिस्टर ने कहा होगा। कोई सेना का आदमी नहीं कहेगा। यह तो हमारे लिए अपमानजनक बात है। हमने कहा ठीक है मिनिस्टर ने कहा होगा लेकिन तुम यह बताओ कि इतनी सेना और इतने शस्त्रास्त्र होते हुए भी तुम काबू क्यों नहीं कर पा रहे! तो उसने कहा कि क्या तू समझता है कि तू ही बहादुर है और हम सब कायर हैं। हमने कहा क्यों, क्या हुआ? बोले सुन ले हमारे लिए दिल्ली से आदेश आया है। दिल्ली के आदेश हमारे लिए ये हैं कि जब तक तुम्हारे ऊपर गोली नहीं झाड़ी जाती तब तक तुम्हें गोली नहीं झाड़नी चाहिए। वह बोले भले आदमी मेरे ऊपर यदि गोली झाड़ी जाएगी तो मैं गोली झाड़ने के लिए जिन्दा रहूँगा तब तो गोली झाड़ूँगा। तो दिल्ली से हमारे लिए आदेश है कि जब तक तुम्हारे ऊपर गोली नहीं झाड़ी जाती तब तक तुम्हें गोली नहीं झाड़ना चाहिए। तू भी वहाँ होता तो कुछ कर सकता था क्या? हमने कहा भई माफ करना हमको ये पता नहीं था। अब यह मानसिकता है, माने दृश्य यह दिखा कि इतनी सेना इतने शस्त्रास्त्र साढ़े चार लाख लोगों को नहीं दबा सकते, ये लोगों को पता नहीं था कि दिल्ली के आदेश ये थे कि तुम्हारे ऊपर गोली नहीं झाड़ी जाती तब तक तुम्हें गोली नहीं झाड़नी चाहिए। ये आदेश किसी को पता नहीं। अखबार में भी नहीं आता। अखबार में महत्त्व की बात नहीं आती। बाकी आलतू-फालतू बातें आती हैं। तो ये अखबार में भी नहीं था। ये इच्छाशक्ति का एक नमूना है।

दूसरा उदाहरण हम देखें। ऐसा है कि जिसका उदाहरण दे रहा हूँ उनके सिद्धान्तों से हम सहमत नहीं हैं लेकिन एक सीमित प्रश्न के संदर्भ में ये उदाहरण दे रहा हूँ। सिद्धान्तों से हम सहमत नहीं हैं। हिन्दुस्थान में जैसे आज वैस्ट बंगाल को कहा जाता है कम्युनिस्टों का गढ़ है। हालांकि अखबार में तो ज्यादा बलवान हैं कम्युनिस्ट। वहाँ धरती पर उतने बलवान नहीं हैं। और नेता लोग अखबारों पर से अन्दाजा लगाते हैं, वो अलग बात है। जैसे वैस्ट बंगाल का नाम आता है वैसे 1930-31-32 में जर्मनी में पर्शिया था। यह कम्युनिस्टों का गढ़ था और वहाँ अपने जैसे पार्लियामेंटरी सिद्धान्त थे। पार्लियामेंट में भी कम्युनिस्टों के मैम्बर थे। वे पर्शिया में आतंकवाद चलाते थे और इसके कारण यदि पुलिस को फायरिंग करना पड़ा और किसी की मृत्यु हुई तो पार्लियामेंट में ये कम्युनिस्ट मैम्बर उठकर एकदम शोरगुल मचाते थे और कहते थे कि यहाँ डिक्टेटरशिप आ रही है। हवान पेटन कई साल से प्रमुख रहा जर्मन का। वह उतना ही कमजोर था जितने हमारे प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री को छोड़कर, सारे प्रधानमन्त्री हमेशा जितने कमजोर रहे हैं उतना ही कमजोर हवान पेटन था। वह तो बेचारा कमजोर आदमी था लेकिन उसके ऊपर दबाव डालने के लिए कम्युनिस्ट एम.पी. उठकर पार्लियामेंट में शोरगुल मचाते थे कि यहाँ फायरिंग हुआ है। चार लोगों की हत्या हुई है। डिक्टेटरशिप आ रही है। लोकतन्त्र का गला घोंटा जा रहा है और जब इन कड़े शब्दों का प्रयोग होता तो पेटन साहब एकदम झुक जाते और कहते कि अब मैं इन्क्वायरी कमीशन बिठाऊँगा। इन्क्वायरी कमीशन बैठे। 6-7 बार ऐसा हुआ। इन्क्वायरी कमीशन में क्या होता था कि बड़े-बड़े पुलिस आफिशियल्स की पब्लिक ट्रायल होती थी कि फायरिंग क्यों की, लाठीचार्ज क्यों किया। टार्चर क्यों? और ये कोर्स परीक्षा करने वाले गुण्डागर्दी करने वाले लोग जो रास्ते पर गुण्डागर्दी करते थे, ऐसे

थर्ड क्लास कम्युनिस्ट इनकी कोर्स परीक्षा करते थे। पब्लिक ट्रायल थी। लोग ट्रायल देखने के लिए आते थे। और सब के सामने इनको अपमानित होना पड़ता था। माने बड़े हाई स्टेटस पुलिस अफसर कटघरे में खड़े गुण्डागर्दी करने वाले लोग उनकी कोर्स परीक्षा कर रहे हैं, बाकी लोग देख रहे हैं। 6-7 बार ऐसा हुआ कि सार्वजनिक अपमान इन लोगों का हुआ और सार्वजनिक अपमान होने के कारण बाद में इनके मन में आया कि अरे सरकारी लॉ एण्ड आर्डर रखने के लिए हम सारा काम कर रहे हैं। हम कर रहे हैं तुम्हारे लॉ एण्ड आर्डर के लिए। ये जो गुण्डागर्दी करते हैं तुम इनके सामने झुक जाते हो। हम को ही कटघरे में खड़ा करते हो, हमारा सार्वजनिक अपमान कराते हो। हमें क्या पड़ी है? तुम जानो तुम्हारा लॉ एण्ड आर्डर जाने। हम अब हस्तक्षेप नहीं करेंगे। जो कुछ होगा सो होगा। तो सारा पुलिस डिपार्टमैंट निष्क्रिय उदासीन हो गया। इसका एडवान्टेज लेकर कम्युनिस्टों का और उनका हौसला बढ़ गया।

तुम्हारी राईफल से छूटने वाली हर एक गोली मेरी राईफल से छूटने वाली गोली है -

ऐसी अवस्था थी जब 1933 का चुनाव हुआ। अब पर्शिया में कम्युनिस्टों का जोर था तो भी कुल मिला कर जर्मनी में हिटलर की नाजी पार्टी चुन कर आई। और चुन के आने के बाद जो पहली पार्टी थी उसमें से एक मार्शल बोरिंग को पर्शिया का होम-मिनिस्टर भेजा गया। जाने के बाद सात दिन के अन्दर-अन्दर उन्होंने पर्शिया के पुलिस आफिशियल की रैली ली। पुलिस आफिशियल की रैली के सामने उनका भाषण हुआ। अब हमारे देश में हमारे जैसे जो नेता माने हुए लोग हैं, हमारे को तो इतनी बोलने की बीमारी है कि हम भाषण देने के लिए खड़े होते हैं तो ढाई-तीन घण्टे तक मुँह बन्द ही नहीं होता। उनका केवल तीन

मिनट का भाषण हुआ और तीन मिनट का भाषण अखबारों में आया था जिसमें कुछ हिस्सा इनवर्टिड कॉमा में था। इनवर्टिड कॉमा याने अवतरण चिन्ह। यह तो उनके मुँह के शब्द थे ही जो उसमें दिए गए थे। कुछ भाषण इनवर्टिड कॉमा के बाहर था। तीन मिनट में उन्होंने जो कहा वह यह था कि आप सब लोग जानते हैं कि चुनाव हुआ है। पुरानी पार्टी चली गई अब हमारी पार्टी आई है। कानून और शान्ति व्यवस्था हमारे लिए महत्वपूर्ण है। उसके बाद इनवर्टिड कॉमा में उनका भाषण आया था कि "तुम्हारी राईफल से निकली हुई हरेक गोली मेरी राईफल से निकली हुई गोली है। और मैं यहाँ का गृहमन्त्री हूँ।" दो वाक्यों पर विचार कीजिए कि तुम्हारी राईफल से छूटने वाली हरेक गोली मेरी राईफल से छूटने वाली गोली है और मैं यहाँ का गृहमन्त्री हूँ। पुलिस डिपार्टमैंट में जो उदासीनता आई थी समाप्त हुई। दो वाक्यों का क्या असर हुआ। छह महीने के अन्दर-अन्दर। मैं उस समय कालेज में था इसलिए हमारे कम्युनिस्ट मित्रों ने हमको वह सारी किताबें दिखाईं और उसमें कोई अच्छा दृश्य नहीं था। ग्लेज्ड पेपर पर सारे चित्र थे। ये कम्युनिस्ट नेता हैं उनको मारा। वह कम्युनिस्ट नेता शाट टू डैथ, वह फलाना कम्युनिस्ट नेता बीटन टू डैथ। छह महीने के अन्दर-अन्दर सारा मामला खत्म हो गया। अब ये दो वाक्यों में जो अन्तर है वह सरकार की शक्ति दिखाता है। एक हमारा वाक्य हिन्दुस्थान का। "तुम्हारे ऊपर जब तक गोली नहीं झाड़ी जाती तुम गोली मत झाड़ो।" ये हमारी सरकार की इच्छाशक्ति है। और मार्शल बोरिंग की इच्छाशक्ति थी कि "तुम्हारी राईफल से निकली हुई हरेक गोली यह मेरी राईफल से निकली हुई गोली है। और मैं यहाँ का गृहमन्त्री हूँ।" दोनों में जो अन्तर है वह सरकार की इच्छाशक्ति का अन्तर है। हमारी सरकार की जब इच्छाशक्ति हो जाएगी ये एक महीने के अन्दर-अन्दर सारा मामला खत्म हो सकता है क्योंकि शास्त्र है। ये

कोई हम अपनी बड़ाई की बात नहीं कर रहे। दुनिया में हर जगह यह शास्त्र चलता है। आतंकवाद का भी दुनिया में शास्त्र है। उसके रास्ते तय हैं। यह रास्ता लेना है या नहीं। यह सरकार ने तय करना है सरकार की कमजोरी के कारण, इच्छाशक्ति की कमजोरी के कारण गड़बड़ होती है। दुनिया में इच्छाशक्ति सरकार की जब तक नहीं तब तक आतंकवाद दुनिया में कहीं भी खत्म नहीं हुआ। जनता सहायक हो सकती है किन्तु केवल जनता नहीं है। हाँ जहाँ सरकार नहीं है जहाँ अराजकता है वहाँ की परिस्थिति भिन्न है। जहाँ-जहाँ प्रतिष्ठापित सरकार है वहाँ-वहाँ सरकार की इच्छाशक्ति नहीं रही तो जनता के हाथ से नहीं हो सकता। यह इच्छाशक्ति का सवाल है। लोकतान्त्रिक पद्धति में सरकार की इच्छाशक्ति जाग्रत करने के निश्चित ही रास्ते हैं, जिसके कारण सरकार पर दबाव डाला जा सकता है। इसके जो रास्ते हैं सब जानते हैं चाहे वह डिमांस्ट्रेशन हो या धरना। चाहे वह भूख हड़ताल हो या कुछ और। दबाव के जो सारे रास्ते हैं उनका उद्देश्य केवल सरकार की इच्छाशक्ति को जाग्रत करना है।

समझदारी के विभिन्न स्तर -

किन्तु अब दूसरी भी बात है, मैंने प्रारम्भ में कल एक बात कही थी। मैं रिमाईंड कराना चाहता हूँ, यहाँ आप लोग बैठे हैं। एक रास्ता सामान्य नागरिक के रास्ते पर जाने वाला है। मैंने इस शब्द का प्रयोग किया था कि दुकान, मकान, बैंक-बैलेंस वाला नागरिक व आप। दोनों में कुछ अन्तर है ऐसा मैं मानता हूँ। उसके सामने कोई ध्येय नहीं है। वह तो इतना ही चाहता है कि मेरा बैंक-बैलेंस रहे, बीवी-बच्चों का काम चलता रहे, लड़कियों की शादी हो जाए, लड़के अच्छे ओहदे पर पहुँच जाएँ, मैं आराम से अपना बुढ़ापा काट सकूँ, बस उसके जीवन की इतिश्री

यही है। और उसको कुछ नहीं चाहिए। इसमें अगर बाधा किसी कारण आती है तो वह बाधा बरदाश्त नहीं करेगा। इस समय वह संघ-वालों को कहेगा। कि क्यों भई तुम्हारे लट्ठ क्या कर रहे हैं? यहाँ तो हवा में डण्डा घुमाते हो, वहाँ क्या कर रहे हो? ये सब उसी के लिए है कि बैंक-बैलेंस को तकलीफ न हो जाए। अब उसका सोचने का ढंग हम समझ सकते हैं। आप उस श्रेणी के नहीं। उसमें और आप में अन्तर है। वह भारत के भाग्य के लिए जिम्मेदार नहीं है। उसके सामने कोई ध्येय नहीं है। परम वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम् यह जिम्मेदारी आपकी है उसकी नहीं है। उसकी जिम्मेदारी तो इतनी है कि लड़कियों की शादी होनी चाहिए, लड़के बड़े ओहदे पर पहुँचना चाहिए, बुढ़ापा आराम से कटना चाहिए, इतनी उसकी जिम्मेदारी है। परम वैभवं की जिम्मेदारी उसके लिए नहीं, आपकी है। एक इसके कारण आगे का सोचना उसकी जिम्मेदारी नहीं, आपकी है। और मैं आपको बताता हूँ कि कुछ लोग कहते हैं कि हम जरा सब को समझा सकें और ये समझ कैसे सकेंगे? उसको समझने की इच्छा भी नहीं है। आप जरा बातें करके देखिए, आप बहुत गहराई में जाकर उसको समझाएंगे कि भई ऐसा है, वैसा है। वह कहता है कि सारा मत समझाओ, एक बात बताओ, मामला समाप्त होगा कि नहीं? जिससे हमें परेशानी हो रही है बाकी झंझट मत बताओ। क्योंकि उसको किसी बात में दिलचस्पी नहीं है। आपकी तो दिलचस्पी इसमें है कि राष्ट्र कैसे आगे बढ़ेगा। उसका सीमित लक्ष्य है, इसलिए आप उसको लम्बी-चौड़ी बात कहेंगे तो वह सुनेगा ही नहीं, आप बक-बक करते रहे। वह अपनी दूसरी बात का विचार करेगा। आप उसे क्या समझा सकते हैं। वह ग्रहण नहीं करेगा तो वहाँ आप डाल कैसे सकते हैं। आपका स्तर दूसरा है, आपको सब चीजों को समझ लेना चाहिए। उसमें एक यह भी समझना चाहिए, एक सर्वसाधारण आदमी की समझदारी का स्तर और जिन्हें नेतृत्व करना

है उनकी समझदारी के स्तर में अन्तर होना चाहिए।

सस्ती लोकप्रियता राजनीति का आधार -

आज की राजनीति में अलग बात है। आज की राजनीति में चलती है सस्ती लोकप्रियता। उसके पीछे जाना जिसके कारण सस्ती लोकप्रियता प्राप्त हो सकती है। वही बोलना जो बात सामान्य आदमी बोलता है, मतलब है सामान्य बात बोलने से लोकप्रियता प्राप्त हो सकती है उसी के कारण चुन कर आ सकते हैं। उसी के कारण मन्त्री, प्रधानमन्त्री बन सकते हैं तो सामान्य आदमी जिसके सामने कोई बड़ा ध्येय नहीं है जो राष्ट्र के लिए जिम्मेदार नहीं, जिसके सामने लम्बी दृष्टि नहीं है उसके वोट पाने के लिए उसी के समान बात करना। इसके कारण लोकप्रियता प्राप्त करते हैं। मन्त्री पद प्राप्त करते हैं। राजनीति में फैशन होने के कारण लोग भूल जाते हैं कि नेता और जनता, सामान्य आदमी और नेतृत्व करने वाला, इनके समझ व स्तर में अन्तर होना चाहिए। और लोग यह भूल जाते हैं केवल इतना ही समझते हैं कि हम जरा सब को सन्तुष्ट कर सकें। सब को समझा सकें सब लोगों में हम प्रसिद्ध हो सकें। इतना राजनैतिक नेता के समान वे नहीं कर सकते, जिन्होंने कुछ ध्येय सामने रखा है। राष्ट्र का क्या होगा, ऐसा अगर आप सोचते हैं तो आपके सोचने का स्तर उसके सोचने के स्तर से भिन्न होना चाहिए और इसलिए इस विषय से सम्बन्धित बातें आपको ध्यान में रखनी चाहिए।

परिस्थितियों का इलाज धैर्य से होता है -

परिस्थितियां आती हैं, हर चीज का इलाज एकदम नहीं होता। परिस्थितियों का इलाज होता है। इसको समय लगता है और इतने समय तक धीरज रखना सामान्य आदमी के लिए सम्भव नहीं। इसलिए वह

आप को पूछता भी है कि अपने डंडे आप घुमा रहे हो? और उस का असर आप के ऊपर होगा, बड़ी कमाल की बात है। आप अपना और उसका स्तर एक ही समझते हैं क्या? आप राष्ट्र के लिए अपने को जिम्मेदार मानते हैं, आप के सामने ध्येय है उस ध्येय के प्रकाश में आपको सोच-विचार करना है या दुकान, मकान, बैंक-बैलेंस का सोच-विचार करना है। आपके और उसके स्तर में अन्तर है या नहीं? इस बैठक में हम बैठे हैं तो हमारी कुछ योग्यता है कि नहीं, इस बैठक में बैठने की? ये राष्ट्र निर्माताओं की बैठक है, दुकान, मकान बनाने वालों की नहीं। इस के नाते हम सोचें और नेशनबिल्डर्स के नाते हम सोचें और समझें तो ऐसा दिखाई देगा के इतिहास में बहुत बार ऐसे प्रसंग आते हैं कि जिसमें एकदम इलाज सम्भव नहीं होता। जैसे हमने कहा भी सरकार को विल-पॉवर जाग्रत करनी चाहिए। यह एकदम नहीं हो सकता। कल मा. रज्जू भैया ने भी कहा कि बातचीत होती है। कल और भी दबाव लाएँगे, लेकिन समय लगेगा तब तक यह सारी गड़बड़ चलती रहेगी, तब तक सामान्य नागरिक का धैर्य छूट जाएगा, धीरज छूट जाएगा, आप का भी छूटना है क्या? विपरीत परिस्थिति में सामान्य नागरिक की प्रतिक्रिया की फिक्र न करते हुए ध्येय सामने रखकर ठीक राजनीतिक निर्णय लेना सही नेतृत्व का लक्षण है। लोग क्या कह रहे हैं यदि इसी पर आप जाएँगे तो आप यशस्विता तक नहीं पहुँच सकते।

कल की बैठक में हमने एक उदाहरण दिया था छत्रपति शिवाजी का उदाहरण। अब तो शिवाजी बड़े सफल हो गए इसलिए सब उनका गुणगान करते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि आप को जो लोग कह रहे हैं पंजाब में, वे लोग शिवाजी के समय उस काल में शिवाजी के ऊपर वो सारे आरोप लगाए जाते थे जो आज संघ-वालों पर लगाए जा रहे हैं। शिवाजी पर जिस कालखण्ड में ये सारे आरोप लगाए गए। वह पहला

कालखण्ड आया जब अफजल खान बहुत बड़ी सेना लेकर आया उस सेना का मुकाबला खुले मैदान में करना, जिसको कहते हैं पिचडबैटल। उधर हिन्दू सेना। इसमें शिवाजी यशस्वी नहीं हो सकते थे, इसलिए शिवाजी ने सोचा कि हम पहाड़ी में छिप कर रहेंगे और हम अफजल खान को पहाड़ी क्षेत्र में लाएँगे। हमेशा जो यशस्वी सेना होती है वह अपना रणक्षेत्र चुन लेती है। अपने रणक्षेत्र पर शत्रु को लाती है खुद शत्रु के रणक्षेत्र पर नहीं जाती। लेकिन पहाड़ी तक अफजल खान का आना कठिन था क्योंकि अफजल खान को बताया गया था कि बेटा सब करो पर पहाड़ी इलाके में मत जाओ। क्योंकि यह पहाड़ का चूहा है। एक बार पहाड़ी इलाके में चले गए तो फिर क्या होगा यह पता नहीं। अफजल खान की राजनीति थी कि शिवाजी को पहाड़ी इलाके के बाहर लाना। कैसे ला सकते हैं? अफजल खान ने हिन्दुओं पर अत्याचार करना शुरू किया। महिलाओं का अपमान किया और फिर मन्दिरों को तोड़ना शुरू किया तो भी वह बाहर नहीं आया। तब प्रचार करना शुरू किया कि वह कौन-सा तुम्हारा हिन्दुओं का संरक्षक है? अरे! हिन्दू महिलाओं पर अत्याचार हो रहा है हिन्दुओं के मन्दिर की मूर्तियाँ तोड़ी जा रही हैं, और शिवाजी अपनी आन बचाकर बैठा है वहाँ। यह कौन-सा हिन्दुओं का संरक्षक है, यह तो कायर है। ये प्रचार हिन्दुओं में शुरू किया गया। उसके बाद भी शिवाजी बाहर नहीं आया। आखिरी बार उसने सोचा कि छत्रपति शिवाजी की कुल-देवता तुलजापुर की भवानी है। वहाँ अफजल खान की सेना आ गई। सोचा अब इसके कुल-देवता की मूर्ति ही हम तोड़ते हैं तो वह गुस्से में बाहर आएगा ही। जाएगा कहाँ? शिवाजी के कुल-देवता की मूर्ति भी तोड़ी। शिवाजी अपने पहाड़ी इलाके में ही रहे। चारों ओर प्रचार किया गया। वह लोगों को जंचने लगा कि ये शिवाजी है ही क्या? हिन्दुत्व का संरक्षक बोलता है। स्वयं उसकी कुल-देवता की मूर्ति का

खण्डन किया गया है और वह अपनी जान बचाकर बैठा है। यह क्या हिन्दुओं का संरक्षक है? चारों ओर प्रचार शिवाजी के खिलाफ चला। वह सारा बरदाश्त किया। फिर वह आगे बढ़ा। अफजल खान जब पहाड़ी इलाके के नीचे आया। शिवाजी ने अपना वकील उसके पास भेजा, कहा कि साहब शिवाजी तो घबरा गया है। वह आपके मुकाबले में खड़ा ही नहीं हो सकता, वह लड़ाई क्या करेगा? उसने तय किया है आखिर आप उनके पिता जी के दोस्त हैं आप को वह चाचा कहते हैं। और कहता है कि चाचा मुझे प्राणदान दे दें, अभयदान दीजिए मेरी जान बचा लीजिए। अच्छा, शिवाजी घबरा गया? बोला घबराना ही है। इसमें आपकी सेनाएँ कारण हैं। स्वयं अफजल खान बड़ा लम्बा-चौड़ा ऐसा था उसके सामने शिवाजी नाटा घबरा गया। अफजल खान ने कहा नहीं उनको यहाँ भेजो मैं अभयदान देता हूँ। शिवाजी इतना घबराए हैं कि यहाँ उनके आने की हिम्मत नहीं। उनका सुझाव है कि आप आइए, आप का स्वागत होगा और आपको दावत देंगे। उसके बाद आत्मसमर्पण। आपको सारा राज्य हाथ में दे देंगे। कुछ हलचल उसके मन में हुई होगी। उसने हंसते-हंसते मान लिया। अब जाना है तो क्या सेना लेकर जाना है? वकील ने कहा साहब वह तो पहले ही घबराया है सेना लेकर जाएँगे तो और पीछे जाएगा आपको मिलेगा ही नहीं। अफजल खान को आशा थी कि जिन्दा या मरा हुआ शिवाजी को लाना है वह बीजापुर बादशाह का हुक्म था। वह तो भाग जाएगा आपके हाथ में नहीं आएगा आप कैसे पकड़ेंगे? चलो ठीक है तो ये तय किया जाए दोनों के साथ कितने अंगरक्षक रहेंगे, कितनी संख्या होनी चाहिए। तो निश्चय हुआ कि दो अंगरक्षक शिवाजी के साथ और दो अफजल खान के साथ रहें। और कोई नहीं और पहले निरीक्षण किया जाए कि कोई और सेना के लोग तो नहीं हैं। अफजल खान निरीक्षण करे हिन्दू सेना के लोगों की और

हिन्दू लोग निरीक्षण करें अफजल खान की सेना की और जहाँ शामियाना डाला था वहाँ निरीक्षण बगैरा हो चुका कि यहाँ पर और लोग नहीं हैं। हालांकि कुछ दूरी पर अफजल खान की सेना तैयार थी कि यदि शिवाजी मारा जाता है तो एकदम हमला करेंगे। उधर शिवाजी की सेना खड़ी थी यदि अफजल खान मारा जाता है तो एकदम हमला करेंगे। लेकिन सब दूरी पर थे। वहाँ केवल दो-दो अंगरक्षक लेकर जाना तय हुआ। अफजल खान का समाधान हुआ। अब उधर से शिवाजी उतरे टीले पर से, इधर से अफजल खान गया। बाकी जो हुआ आपको पता चला और उसके बाद अफजल खान की सेना को भी परास्त किया, वध किया गया। लेकिन ऐसा तब हुआ क्या जब अफजल खान ने तुलजापुर भवानी की मूर्ति का खण्डन किया? यह जोश में आ गया? तुम्हारे डंडे क्या कर रहे हैं पंजाब में? आए जोश में, और चलो। जो होगा सो होगा। साले को देख लेंगे। ऐसा नहीं किया। संयमपूर्वक, शान्तिपूर्वक एक रणनीति तय की थी उस रणनीति के अन्तर्गत। आज हमारे खिलाफ भले ही प्रचार चलता होगा, चलने दीजिए। लेकिन अपनी नीति के मुताबिक काम करेंगे। शिवाजी ने काम किया जिससे यशस्वी हुए। केवल भड़ास निकालने के लिए काम करते तो मैदान में चले आते फिर शिवाजी और हिन्दवी-स्वराज्य खत्म हो जाता। भड़ास में आने का काम मकान, दुकान, बैंक-बैलेंस वालों का है हमारा नहीं यह जरा ध्यान में रखो। यहाँ इस बैठक में तुम्हारी कोई खास इज्जत है आप नेशन-बिल्डर्स में से एक हैं। इस इज्जत को निभाना है तो अपने सोचने का ढंग उनके सोचने के ढंग से अलग होना चाहिए। आपको यह समझना चाहिए।

समय के अनुसार झुकना भी नीति है -

आधुनिक समय का एक अच्छा उदाहरण है। आज चीन में

कम्युनिज्म खत्म है। यह बात ठीक है लेकिन माओ एक बड़ा श्रेष्ठ नेता था। कुशल संगठक, श्रेष्ठ विचारक, कुशल सेनापति ऐसा माओ था। जापान ने जब हमला किया तब उस समय चीन की अवस्था ऐसी न थी। जापान का मुकाबला चीन की राष्ट्रीय सरकार कर रही थी जिसका नेतृत्व च्यांगकाई शेक कर रहे थे। उसके खिलाफ कम्युनिस्ट लड़ रहे थे। कम्युनिस्टों को ऐसा दिखाई दिया च्यांगकाई शेक जापान का मुकाबला नहीं कर सकता। कम्युनिस्ट भी जापान का मुकाबला अकेले नहीं कर सकते थे और च्यांगकाई शेक को भी उखाड़ना चाहते थे। माओ ने च्यांगकाई शेक के साथ बात शुरू की। च्यांगकाई शेक कम्युनिस्टों का दुश्मन था। च्यांगकाई शेक को खत्म करके, उसको उखाड़ के ही वहाँ कम्युनिज्म स्थापित करना था। लेकिन जापान ने जब संकट देख लिया तो उन्होंने वार्ता शुरू की और वार्ता में यह कहा कि आपकी और हमारी सेना मिलकर लड़ेगे। तो उन्होंने कहा कि आप अपनी रैड आर्मी को समाप्त करो। आर्मी समाप्त नहीं करते यह जरा ज्यादा हो गया लेकिन एक बात हम जानते हैं। जो बात वह माने, वह अपमान कारक थी। बात उन्होंने मानी कि हमारी रैड आर्मी इन्टेक्ट रहेगी लेकिन हम आपकी कमान में आपका आर्डर मानेंगे। दोनों कट्टर दुश्मन। इसी को आगे चलकर उखाड़ना है और उखाड़ा भी। लेकिन जो कट्टर दुश्मन हैं उसको माओ ने यह वचन दिया कि आपकी सी.आई.सी. मानेंगे आपकी जो कमांड आएगी जो भी आदेश आएगा उसके मुताबिक हमारी सेना चलेगी। वैसा उन्होंने काम किया। यह कोई बड़ा सम्मानजनक काम नहीं था। अपमानजनक था। लेकिन इसका विरोध केवल कुछ लोगों में हुआ। च्यांगकाई शेक के अंडर हम काम करें वह हमारा पक्का दुश्मन है वे लोग नाराज हुए। किन्तु जिसको कुछ बड़ा काम करना होता है उसको यह भी देखना होता है कि किस समय क्या करना है?

जय सिंह औरंगजेब की बड़ी सेना लेकर आए। बहुत प्रचण्ड सेना थी। शिवाजी का उसके सामने टिकना बड़ा मुश्किल था। शिवाजी ने विजय प्राप्त की थी। 32 किले उस समय शिवाजी के पास थे। आपको आश्चर्य होगा शिवाजी ने उस समय 32 में से 20 किले औरंगजेब को दिए कितना अपमानजनक था। 32 में से 20 किले दिए। केवल 12 किले रखे और बाकी जो हुआ वह सारा इतिहास बताने की आवश्यकता नहीं कि संग्राम में नहीं जाएँगे, औरंगजेब से मिलेंगे वगैरा। यह कितना अपमानजनक समझौता मान लिया। किन्तु यह समझ लीजिए कि सारे जो उदाहरण मैंने रखे कि कुछ आगे रहे कुछ पीछे हटे कुछ अपमानजनक परिस्थिति भी मान ली। किन्तु कायर आदमी का मान लेना और बहादुर आदमी का मान लेना इसमें अन्तर यह रहता है कि जो कायर होता है वह झुक जाता है जो झुक जाता है तो मर ही जाता है और जो बहादुर होता है वह समझता है अरे यह प्रसंग है इस समय हम को झुकना पड़ेगा और थोड़ा पीछे हटना पड़ेगा अपमान की परिस्थिति आई है। लेकिन जब भी नीचे से हाथ निकलता है फिर से हम बदला लेंगे। 32 में से 20 किले दिए शिवाजी ने और 20 किले देने की अपमानदायक परिस्थिति के कारण लोगों में विफलता का भाव भी आया। उस समय मन में यह भाव निश्चय ही था कि हम 20 किले दे रहे हैं, 20 की बात क्या है? सारे हिन्दवी स्वराज्य की हम स्थापना करने वाले हैं यह विषय लेकर यह 20 किले देने की सुलह की। अफजल खान का सारा अपमान बरदाश्त किया यह क्या है? वह अपनी जान बचाकर छिप रहा है यह सारा अपमान उसने बरदाश्त किया किन्तु मन में एक भाव यह भी था कि हम बढ़ते रहेंगे चाहे अपमानजनक सुलह कर लो हम तुम्हारी कमाण्ड मानेंगे जो हमारा दुश्मन था किन्तु साथ ही यह निश्चित था कि च्यांगकाई शेक को आगे चलकर उखाड़ने वाले हैं। माओ के समान विजय का विश्वास

लेकर जो इस तरह की सुलह करते हैं उनकी तुलना कायरों से नहीं हो सकती। जैसे एक मिट्टी का बॉल है और एक रबड़ का बॉल है। रबड़ का बॉल नीचे डालें तो वह नीचे जाता है तो इस विश्वास के साथ जाता है कि जो मुझे नीचे पटक रहा है, मैं नीचे जाऊँगा लेकिन इसके सिर पर ऊपर उठकर जाऊँगा, तो नीचे पटकने वाले के सिर पर वो रबड़ का गेंद चला जाता है। और कायर मिट्टी का गेंद है जिसे यदि किसी ने जमीन पर पटक दिया तो सज्जन आदमी के समान जमीन पर ही रहता है। हम कौन हैं? हम मिट्टी का गेंद हैं या हम रबड़ का गेंद हैं? यह सवाल आ जाता है। तो यहाँ आशय समझना कि रणनीति के नाते कभी-कभी यह कहना पड़ता है। बाकी रास्ता आगे क्या है? यह हम समझ सकते हैं। किन्तु तुरन्त रास्ता नहीं है तब तक यह बर्दाश्त करना पड़ेगा।

विजय के विश्वास से प्रतिकूलता भी बर्दाश्त करते हैं -

बर्दाश्त वे करते हैं जिनके मन में विजय का विश्वास होता है। एक बहुत अच्छा किरातार्जुनीय में श्लोक आया है। विजय के निश्चय वाले व्यक्ति क्या करते हैं? वे स्वीकार करते हैं। ऐसी सुलह, सन्धि जो दोषास्पद है अपने लिए जो प्रतिकूल है। ऐसी भी सुलह मान लेते हैं, लेकिन मन में यह विचार रखते हुए कि यह सारा हम सुधारने वाले हैं, जो आज की सुलह है यह सारी सुलह हम कल फैंक देने वाले हैं। लेकिन हाँ उतनी ताकत इकट्ठा करते समय तक जरा राह देखनी है। इसलिए वह सुलह स्वीकार कर रहे थे जो किरातार्जुनीय में कहा है। ये सब श्रेष्ठ पुरुषों के लिए लागू होता है। इसे समझना चाहिए कि परिस्थिति के अनुसार, इसलिए नहीं की दब गए, झुक गए। सरकार पर दबाव लाना है इसके लिए लोकतान्त्रिक ढंग से प्रयास करना पड़ेगा उसके लिए समय लगेगा। तब तक हम इतना कर सकते हैं कि लोगों में

सौहार्द का अभाव न हो।

नित्य शाखा से साहस बढ़ेगा -

सिख हिन्दू और गैर सिख हिन्दू दोनों इस बात को समझ सकें कि वास्तविकता क्या है। हम सब एक ही समाज के हैं यह भाव सब लोगों के अन्दर कैसे उग सकता है। एकदम मर गया रे बाप! ऐसी मनोवृत्ति न आ जाए। कुछ लोगों का साहस बढ़ सके। हमारी जो नित्य शाखा है, वे नित्य शाखाएँ बराबर चल रही हैं, उसके कारण लोगों का साहस बढ़ेगा। आज एकदम जो सामान्य आदमी कहता है, परिस्थिति पर सात दिन के अन्दर आप कुछ इलाज करो। सात दिन में नहीं होगा धीरज के साथ काम करना पड़ेगा लेकिन इलाज होगा। कैसे करना है? इसका हमारे पास पूरा चित्र है इसको लागू कैसे करना है। इस पर अमल करने में समय लगेगा तब तक यह सब आपको बर्दाश्त करना होगा।

लहर और स्थाई-शक्ति में अन्तर है -

जब कोई बड़ा संकट आ जाता है तो जल्दी में कुछ रास्ता नहीं निकलता। एक उदाहरण मेरे सामने आता है। लहर है। समय-समय पर हर देश में लहर आती है। हमारे मजदूर क्षेत्र में भी इसे हमने अनुभव कर लिया। लोग समझते नहीं कि लहर और स्थाई-शक्ति में अन्तर क्या है? वे तो यह नहीं समझते उनके लिए सब एक हैं। हमारे मजदूर क्षेत्र में हमने देखा भारतीय मजदूर संघ का काम बम्बई में शुरू हुआ। कोई हम को पूछता नहीं था। कोई सलाम नहीं करता था। और एक उस समय जार्ज फर्नांडिस बम्बई का नेता था और जार्ज की लहर थी। जो यूनियन खड़ी होती थी वह यह सोचता था कि हम को जार्ज ही प्रधान चाहिए। वह बादशाह था बम्बई के मजदूरों का। लोग हमारे रमण भाई साहब, मनोहर

भाई मेहता को पूछते थे कि तुम कहाँ खड़े हो? तुम को पांच मजदूर नहीं सलाम करते। बात सही है। पांच लोग हम को तो नहीं सलाम करते किन्तु हमारे रमण भाई और मनोहर भाई कहते थे कि ये लहर है टल जाएगी। वह जल्दी थोड़े ही निकलती है। टाइम लग जाएगा। जैसे-जैसे टाइम लगे स्वयंसेवक ही हमारे भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्त्ता को पूछने लगे कि अरे! निकल जाएगा, निकल जाएगा कब से लगा रखा है। जार्ज फर्नांडिस का तो बोलबाला चल रहा है, जय-जयकार चल रही है तुम को तो कोई पूछता तक नहीं। हमारे लोगों ने कहा भाई पूछेंगे आप फिक्र मत कीजिए। और आज स्थिति ऐसी है कि बम्बई में जार्ज एक भी इण्डस्ट्री में हड़ताल नहीं करा सकता। जार्ज के लिए वहाँ अनुयायी नहीं हैं। जहाँ भारतीय मजदूर संघ को कोई सलाम नहीं करता था, वहाँ आज भारतीय मजदूर संघ नम्बर दो पर है। बम्बई में हमारा काम बहुत अच्छा है और जिस जार्ज को बादशाह कहा गया और नई यूनियन खड़ी हो गई, जार्ज को अध्यक्ष बनाया गया। आज जार्ज की संगठन शक्ति इतनी छोटी हो गई है कि भारत सरकार उसको नहीं पूछती कि भई तुम्हारी संख्या क्या है? तुम्हारी यूनियन क्या है? तुम्हारा नम्बर क्या है? भारत सरकार ने नम्बर दिए। इंटक नम्बर एक भारतीय मजदूर संघ नम्बर दो है। हिन्द मजदूर सभा नम्बर तीन है। लेकिन इस नम्बर में जार्ज फर्नांडिस की पार्टी कहीं नहीं है। इनको पूछा तक नहीं। ये जार्ज बम्बई का बादशाह था और हम को एक आदमी भी सलाम नहीं करता था। अपने स्वयंसेवक अधिक धीरज छोड़ने वाले थे, पूछते थे कि आपका क्या होगा जार्ज का इतना है। बीच में आपने नाम सुना होगा दत्ता सामन्त का। उसका क्या हुआ? हमने कहा यह लहर है चली जाएगी, धीरज रखें। आज दत्ता सामन्त का क्या रहा?

हमारे किसान क्षेत्र में सब जानते हैं शरद जोशी का नाम, हर दिन

पेपर में आता है। आन्दोलन चला रहा था। डेढ़ लाख लोग रास्ते पर थे। उस दिन हम कहीं से आ रहे थे। तो हमारे लोगों ने कहा कि वहाँ मत जाओ, कहा कि हम भारतीय किसान संघ के हैं। कितने लोग थे आपके संघ में 43 लोग। यह ऐसा आन्दोलन है तुम्हारा, शरद जोशी के डेढ़ लाख लोग रास्ते पर हैं। बोले हम जानते हैं। आपका क्या होगा? हमारे लोगों ने कहा हम देख लेंगे। मैं था वहाँ। मैंने कहा यह लहर है। अरे! यार यह लहर-वहर की बात आप कहते हैं। यह ठीक नहीं है आज शरद जोशी का आधा भी फालविंग रहा है क्या? लहर की बात ऐसी होती है।

नागपुर में मेरा जन्म हुआ इसलिए समुद्र तो मैंने देखा नहीं था। पहली बार जब मैं समुद्र में गया। केरल में जाने के बाद समुद्र देखा, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि जिस समय पहाड़ जैसी लहरें आती थीं, पहाड़ जैसी लहरें। उस समय भी समुद्र-स्नान करने के लिए जवान लोग भी जाते थे, बूढ़े भी जाते थे और महिलाएँ भी जाती थीं। हम दूर से देखते थे कि अरे, भाई जवान लोग हैं, ताकतवर हैं, यह पहाड़ जैसी लहर का मुकाबला कर सकते हैं। ये बूढ़े लोग भी जा रहे हैं, और महिलाएँ जा रहीं हैं। और लहर तो ऐसी पहाड़ जैसी आ रही हैं, इनका क्या होगा? लेकिन हमने बाद में देखा कि बूढ़े और महिलाएँ क्या करते थे? वे लहर की तरफ देखते रहते थे, अन्दर पानी में घुसते थे और जैसे ही लहर पास आती थी तो नाक दबाकर अन्दर चले जाते थे। पानी के नीचे चले जाते थे, लहर आती थी, चली जाती थी, थोड़ा-सा इनको धक्का लगता था ज्यादा नहीं। और यह पहाड़ जैसी लहर आकर वापिस जाने लगती थी तो ये बूढ़े और महिलाएँ खड़े हो जाते थे और लहर की तरफ देखते थे और बोलते थे कि अरे, बेटा तुम आई भी जैसी वैसी चली गई हम जहाँ के तहाँ खड़े हैं। तो यह लहर वाली बात जो है वह ध्यान में रखनी चाहिए। धीरज के साथ सारा काम हो सकता है। कुछ रणनीति हुआ करती है।

सामान्य आदमी का धीरज और आपका धीरज यह समान नहीं हो सकता। आप परमवैभव का एक स्वप्न लेकर चले हैं। उसके अनुकूल रणनीति बनाई है। हर समय दिल की भड़ास निकाल दी और बड़ा जोश वाला काम किया, केवल दिल की भड़ास निकालने से काम नहीं होता। सोच कर काम करना पड़ता है। राष्ट्र निर्माण के प्रति हम कटिबद्ध हैं। अपना नेतृत्व सारा सोच कर काम करता है पूरे विश्वास के साथ, धीरज के साथ और अन्य लोगों के मत का अपने ऊपर प्रभाव न होने देते हुए। जिनके ऊपर अन्य लोगों के मत का प्रभाव होता है वे अन्य लोगों के समान सोचने लगते हैं। उनसे काम नहीं होगा। आपको वोट मिल सकता है। राष्ट्र पुनर्निर्माण नहीं हो सकता। अपने ढंग से हम सोचें धीरज के साथ इस समय रहे तो समझ लीजिए कि लहर ज्यादा देर टिक नहीं सकती।

प्रकृति के नियम का विरोध ही नाश का कारण है -

परिस्थितियाँ होती हैं। इसका कारण है। इतना केवल बताकर मैं अपना भाषण पूरा करूँगा। आप यह समझ लीजिए कि यह प्रकृति का नियम है कि जो बात प्रकृति के कर्म के विरोध में जाती है वह बात स्वयं नष्ट होती है। समय लगता है। हमें क्या काम करना है यह भी बताऊँगा। जो-जो बात प्रकृति के कर्म के नियमों के खिलाफ जाती है उसके अन्दर अन्तर्विरोध-कांट्राडिक्शन पैदा हो जाते हैं। कल हमने एक छोटा-सा उदाहरण दिया था। महाराष्ट्र में अस्पृश्यों का बड़ा आन्दोलन खड़ा हुआ। डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने खड़ा किया। प्रकृति की धर्म मर्यादाओं के अन्तर्गत रहते हुए, जिसको उन्होंने कान्स्टीट्यूश्नल मोरेलटी का नाम दिया। उस विषय में मोरेलटी का अर्थ भी धर्म ही होता है तो उस दायरे में रहते हुए उन्होंने अस्पृश्यों का एक बड़ा आन्दोलन खड़ा किया। बड़ा

आन्दोलन तो खड़ा हुआ। लाखों लोग इकट्ठा होने लगे बाबा साहब के नाम पर। ऐसे में बाबा साहब की मृत्यु हो गई। मृत्यु होने के बाद बाकी लोग जो थे वे कान्स्टीट्यूशनल मोरेलटी मानने वाले लोग नहीं थे और उसमें फिर लोगों को लगा कि केवल बाबा साहब की जय-जयकार करने से लाखों लोग हमारे पीछे आते हैं। सबमें नेता होने की इच्छा हुई। धर्म की बात दूर गई। कान्स्टीट्यूशनल मोरेलटी की बात दूर गई और जैसे उन्होंने लोकप्रियता का ऐडवान्टेज लेना शुरू किया। आज आप देखिए कि बाबा साहब के मानने वाले कितने धड़ों में विभक्त हुए। बाबा साहब का निधन हुआ उस समय रिपब्लिकन पार्टी का जन्म नहीं था शेड्यूल-कास्ट फैडरेशन थी। लेकिन एक मजबूत किला था। आज कितने ही धड़ों का वहाँ निर्माण हो गया है। ये कोई आपके और मेरे कारण निर्माण नहीं हुए जैसे ही उन्होंने प्रकृति और धर्म के नियमों के खिलाफ जाकर काम करना शुरू किया धीरे-धीरे होते-होते वैयक्तिक इच्छाएँ बढ़ गईं।

मैं नेता क्यों नहीं हो गया? मेरा ग्रुप तुम्हारा ग्रुप, आपस में झगड़ा। सारा होते-होते आज सारा उनका मामला बढ़ ही रहा है। आज प्रत्यक्ष उदाहरण हम लोग देखते हैं। बंगाल का उदाहरण देखिए बंगाल में सी.पी.एम. की सरकार कई साल तक थी। यह आपातकाल के पहले की बात है मैं जब बंगाल में जाता था, आपको आश्चर्य होगा। मेरे साथ 4-5 लोग आगे-पीछे चलते थे। सी.पी.एम. ने आतंकवाद खड़ा कर दिया था, मौहल्ले के मौहल्ले ऐसे थे जहाँ कोई जा नहीं सकता था। लोगों ने अपनी शादियाँ भी बंगाल में मनाना बंद कर दी। जो-जो सी.पी.एम. के नहीं हैं ऐसे प्रमुख नेताओं को मारने का काम सी.पी.एम. ने शुरू किया था। लेकिन धर्म और प्रकृति के खिलाफ जाने वाला काम था। थोड़े ही दिन में ऐसी परिस्थिति आ गई कि चारों ओर से उसके खिलाफ वायुमण्डल ऐसा खड़ा हो गया और फिर आपस में झगड़े हुए। हमेशा

ऐसा होता है कि जो धर्म और प्रकृति के खिलाफ जाने वाले लोग हैं उनका काम कुछ समय के लिए बढ़ता है। लेकिन जैसे हमारा काम बढ़ गया है, हम कुछ हस्ती बन गए, ये कुछ यश आ रहा है, कुछ लाभ होने वाला है, ऐसी परिस्थिति आते ही यह लोग आपस में लड़ने लगते हैं। यह नियम प्राकृतिक नियम है। यह अन्तर्विरोध है। यह पंजाब रहे, बंगाल रहे, आन्ध्र रहे, हर जगह है। आन्ध्र में भी ऐसे ही नैक्सलाइट का हुआ है। बंगाल में भी वही हुआ। पंजाब में भी होगा या पहले हुआ होगा। लेकिन जिस समय यह धर्म और प्रकृति के खिलाफ जाने वाले लोग ताकत इकट्ठा करते या उनका प्रभाव बढ़ने लगता है चारों ओर लगता है कि अब इनका ये शासन चलेगा। इनकी ही सरकार चलेगी। ऐसे समय यश का शिखर जब सामने आता है ऐसे समय यश प्राप्ति की होड़ शुरू हो जाती है। इससे मेरा क्रैडिट ज्यादा है मैं इसमें नेता बन जाऊँ। जब यह बात शुरू होती है, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की आपस में स्पर्द्धा शुरू होती है, गुट-बन्दी शुरू होती है और तरह-तरह के गुट खड़े हो जाते हैं, ग्रुप बन जाते हैं। ये आपस में लड़ते रहते हैं। अन्तर्विरोध के बोझ के नीचे धर्म विरोधी, प्रकृति विरोधी ये सभी शक्तियाँ ऐसी प्रक्रिया में आ जाती हैं। जब तक यश के शिखर तक नहीं पहुँचते तब तक। जैसे यश का शिखर दिखाई देने लगता है उस समय यश प्राप्ति की होड़ के लिए आपस में झगड़े और उसी में से व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और गुटबन्दी के कारण आपस में अलग-अलग धड़े निर्माण होना। यह हर जगह होगा।

हमें काम इसलिए करना है कि यह सारा होने में टाइम लगता है। और यह होने तक बहुत नुकसान होगा, हिन्दू समाज टूट जाएगा। राष्ट्रीय एकात्मता खत्म होगी, लोगों की जान-माल-इज्जत समाप्त हो जाएगी। इतना बड़ा नुकसान होगा। आगे चलकर उन्होंने वैसे भी खत्म होना है लेकिन उनके खत्म होने तक बड़ा नुकसान होना है, वह न हो

तो हमारा ऑपरेशन सॉलवेज है। ऑपरेशन सॉलवेज का मतलब होता है कि जब कोई बड़ा जहाज डूबने लगता है तो बड़े डूबने वाले जहाज में से ज्यादा से ज्यादा मशीनरी बचाकर ले आना। इसको ऑपरेशन सॉलवेज कहते हैं। वैसे जब संकट आता है तो ज्यादा से ज्यादा परिस्थिति को हम कैसे बचा सकते हैं, सम्भाल सकते हैं। बिगड़ने से बचा सकते हैं, इसके लिए कोशिश करनी है। वैसे भी देखा जाए तो अपने ही बलबूते खत्म होने वाला है। लेकिन खत्म होने से पहले सब राष्ट्र को धक्का देकर जाएगा, वह धक्का न लगे इसलिए ज्यादा से ज्यादा राष्ट्रीय एकात्मता को कायम रखना, जान-माल-इज्जत को ज्यादा से ज्यादा बचाना, इसी दृष्टि से अपना कार्य है और इस कार्य के लिए एक लम्बा दृष्टिकोण लेकर अपना जो निश्चित ध्येय सामने है, परमवैभव सामने रखते हुए विशेष रणनीति पर चलें इसकी फिक्र न करते हुए कि सामान्य आदमी क्या कहेगा कि शिवाजी तो घबरा गया और आत्मसमर्पण कर दिया, इस तरह के सामान्य आदमी की प्रतिक्रिया की फिक्र नहीं है, हम अपनी रणनीति के अनुसार चलें, इतना धीरज हिम्मत रखकर यहाँ बैठे हुए हम लोग विचार करें इतना ही कहना इस समय पर्याप्त है।

सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली

सु प्र

© 011-23514672

Printed by: Print Offset